Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 163 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, मंगलवार 17 दिसम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

देशवासी का प्रथम कर्त्तव्य अपने देश पर अभिमान है।

Being a religious person feels grief looking at an aggrived

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

जवानों की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी, नक्सलवाद का करेंगे खात्मा : केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह

शहीदों के परिजनों की समस्या सुनने की पहल सराहनीय

शहीदों के बलिदान को चिर स्थाई बनाने उनकी प्रतिमा स्थापित की जाएगी : सीएम विष्णुदेव साय

रायपुर (विश्व परिवार)। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अपने बस्तर प्रवास के दूसरे दिन आज अमर वाटिका में नक्सली हमले में शहीद जवानों और नक्सली हिंसा से पीड़ित नागरिकों के परिजनों से मिलकर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने परिजनों से चर्चा करते हुए कहा कि एक लम्बी और वेदनापूर्ण लड़ाई में आपने अपने परिजनों को खोया है, इस दर्द को कम नहीं किया जा सकता है। केंद्र और राज्य सरकार आपके साथ है। शहीदों के त्याग और बलिदान को चिर स्थाई बनाए रखने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार उनकी पुण्य स्मृतियों को सहेजने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आप सभी ने जैसे अपने परिजनों को खोया है, वैसे किसी और को खोना न पड़े। मैं नक्सली हमलों में शहीद हुए जवानों और जान गंवाने वाले सभी लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मां दंतेश्वरी की धरती से नक्सलवाद को पूर्णत: समाप्त कर देंगे। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि भारत सरकार की सुरक्षा एजेंसियां और पुलिस के जवान मजबूती के साथ नक्सल मोर्चे पर काम कर रहे हैं। पिछले एक साल की सटीक रणनीति से नक्सलवाद का दायरा सिमटा है और ढेर सारे विकास के कार्यों को गति देने के लिए चरणबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में नक्सल उन्मूलन अभियान को केंद्र सरकार का पूरा समर्थन और सहयोग मिल रहा है। उन्होंने कहा कि नक्सल उन्मूलन के लिये सरकार तीनों मोर्चों पर काम कर रही है। माओवादी उग्रवाद का रास्ता छोड़कर आत्म सर्मपण करने वालों का स्वागत किया जा रहा है। नक्सल अभियान के दौरान उन्हें गिरफ्तार भी किया जा रहा है और जो दूसरे की जान लेने पर आमादा हैं, उन्हें उन्हीं की भाषा में जवाब दिया जा रहा है। श्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा शहीदों के परिजनों की समस्या सुनने के लिए पुलिस महानिरीक्षक कार्यालय में सप्ताह में एक दिन नियत किया गया है। उन्होंने शासन की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि आईजी कार्यालय में कलेक्टर भी मौजूद रहें और इस मुहिम का हिस्सा बने। केंद्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा कि अपनों को खोने का दर्द कोई कम नहीं कर सकता किंतु हम कुछ ऐसी व्यवस्था बनाएंगे, जिससे आपकी पीड़ा को कम किया जा सके।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि आपके परिजनों की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी। केंद्र और छत्तीसगढ़ सरकार साथ मिलकर आपके हितों का ध्यान रखेगी। आप सभी के लिए जो बेहतर होगा वह कार्य करने के लिए हम सभी दृढ़संकल्पित हैं। उन्होंने परिजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और शहीदों को नमन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे लिए बहुत खुशी की बात है कि हर बार जब हमारे जवानों को नक्सल मोर्चे पर सफलता मिली है केंद्रीय गृह मंत्री जी ने उनकी हिम्मत बढ़ाई है और उनकी पीठ हमेशा थपथपाई है। आज भी वे आपकी हौसला अफजाई के लिए आये हैं और आपके साहस और संकल्प के लिए आपके अभिनंदन के लिए आये हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार शहीद जवानों की स्मृतियों को सहेजने के लिए उनके गांवों में प्रतिमा की स्थापना करेगी।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने शहीद जवानों को दी श्रद्धांजलि

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अपने बस्तर प्रवास के दूसरे दिन आज जगदलपुर स्थित अमर शहीद वाटिका पहुंचकर अमर जवानों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने अमर जवान स्तम्भ में पुष्प चक्र अर्पित कर नक्सल अभियान के दौरान शहीद जवानों की शहादत को नमन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा उपस्थित थे। इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने एक पेड़ शहीदों के नाम अभियान अंतर्गत वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने एक पेड़ शहीदों के नाम अभियान अंतर्गत वृक्षारोपण किया। उन्होंने परिसर में पीपल का पौधा रोपा। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने भी परिसर में शहीदों की स्मृति में रुद्राक्ष का पौधा लगाया। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने आज अमर वाटिका में शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देने के उपरांत विजिटर बुक में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने लिखा कि सुरक्षाबलों के जवानों की शहादत के लिए देश सदैव उनका ऋणी रहेगा।

नक्सल मोर्चे पर तैनात जवानों के बीच पहुंचे केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह

गुण्डम कैम्प में सीआरपीएफ, कोबरा बटालियन, डीआरजी सहित सुरक्षा बल के जवानों से किया सीधा संवाद

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह से संवाद कर जवानों के हौंसले हुए बुलंद

नक्सलमुक्त भारत में सुरक्षा बलों के जवानों का नाम स्वर्णिम अक्षर में लिखा जाएगा

रायपुर (विश्व परिवार)। केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह नक्सल गतिविधियों पर अंकुश लगाने के अपने मिशन के तहत आज बीजापुर के सुदूर एवं माओवाद प्रभावित क्षेत्र गुण्डम में तैनात सुरक्षाबलों के जवानों के बीच पहुंचे। उन्होंने स्थित केन्द्रीय रिजर्व बल 153वीं वाहिनी बटालियन के कैम्प में सीआरपीएफ, कोबरा, डीआरजी सहित सुरक्षा बल के जवानों के साथ संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने नक्सल मोर्चे पर तैनात जवानों से सीधे नक्सल ऑपरेशन की मैदानी स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने जवानों के साथ दोपहर का भोजन भी किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा और पुलिस महानिदेशक श्री अशोक जुनेजा भी उपस्थित थे।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा की विगत एक वर्ष में बस्तर को नक्सल मुक्त करने नवीन सुरक्षा कैम्पों की स्थापना की गई है, जिसका सकारात्मक परिणाम यह रहा है की हमारे जवानों को नक्सल ऑपरेशन में लगातार सफलता मिली। बहुत बड़ी संख्या में नक्सली मारे गये, नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया और उनकी गिरफ्तारी हुई। वह दिन दूर नहीं जब बस्तर और हमारा देश नक्सल प्रभाव से पूरी तरह मुक्त हो जाएगा। मार्च 2026 तक नक्सलमुक्त भारत बनाना हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि नक्सलमुक्त अभियान में सीआरपीएफ, बीएसएफ, कोबरा, छत्तीसगढ़ पुलिस, बस्तरिया बटालियन सहित सभी सुरक्षाबलों का महत्वपूर्ण योगदान है।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज नक्सलवाद समाप्त होने की कगार पर पहुंच गया है। उन्होने कहा कि सुरक्षा कैम्प के दायरे में आने वाले गांवों में सुरक्षाबल के अधिकारी यह अवश्य देखें की शासन की योजनाओं का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर कितनी अच्छी तरह हो रहा है, लोगों को उनके अधिकार मिल रहे हैं कि नही। शासन की योजनाओं का समुचित ढंग से लाभ ग्रामीणों को मिलते रहेगा तो वे शासन और प्रशासन के प्रति समर्पित भाव से सहयोग करेंगे और विकास की ओर अग्रसर होंगे।

गुण्डम की शासकीय उचित मूल्य दुकान का किया शुभारंभ : बीजापुर के गुण्डम प्रवास के दौरान केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कैम्प परिसर में बरगद का पौधा तथा मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने सल्फी का पौधा रोपा। उन्होंने इस मौके पर कैम्प परिसर के सामने नवीन शासकीय उचित मूल्य दुकान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सीआरपीएफ, पुलिस एवं जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

बीजापुर जिले के गुण्डम में केंद्रीय गृहमंत्री ने लगाई चौपाल

माओवादी आतंक से प्रभावित बीजापुर जिले के गुण्डम गांव में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने महुआ पेड़ के नीचे चौपाल लगाकर ग्रामीणों से आत्मीयतापूर्वक खुलकर चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर हमने माओवादी आतंक को 31 मार्च 2026 तक समाप्त करने का लक्ष्य रखा है, जिसका परिणाम है कि आज नक्सलवाद एक छोटे से दायरे में सिमट कर रह गया है। इस मौके पर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय एवं उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा उपस्थित थे। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने कहा कि माओवादी आतंक के भय से ग्रामीणों को मुक्त कराने के लिए बस्तर के विभिन्न स्थानों में सुरक्षा कैम्प स्थापित किए गए है। बस्तर अंचल में अमन और शांति का वातावरण स्थापित हो रहा है। उन्होंने ग्रामीणों से ज्यादा से ज्यादा योजनाओं से जुड़ कर विकास की मुख्यधारा में शामिल होने की अपील की।

लोकसभा में संविधान पर चर्चा, निर्मला सीतारमण का कांग्रेस पर बड़ा हमला

कहा- कांग्रेस नागरिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने बार-बार संविधान में संशोधन कर रही है

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा में भारतीय संविधान पर तीखी बहस के बाद आज (16 दिसंबर) से राज्यसभा में इस विषय पर दो दिवसीय चर्चा शुरू हुई। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इसकी शुरुआत करते हुए कांग्रेस और पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस नागरिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने के लिए बार-बार संविधान में संशोधन कर रही है। उन्होंने इंदिरा गांधी के बचाव के लिए भी संविधान में संशोधन किए जाने की बात कही।

वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा, पिछले 7 दशकों में इस जीवित दस्तावेज यानी हमारे संविधान ने कई संशोधन देखे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू की अंतरिम सरकार के तहत पहले संशोधन ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा दिया था।उन्होंने आगे कहा, यह पहला संशोधन प्रेस स्वतंत्रता को नुकसान पहुंचाने के लिए किया गया था और यह अभी भी मीडिया की स्वतंत्रता को प्रभावित कर रहा है। सांसदों के विरोध के बावजूद प्रधानमंत्री नेहरू ने यह संशोधन किया था।

सीतारमण ने कहा, आपातकाल के दौरान पारित 39वें संविधान संशोधन को पूर्वव्यापी रूप से लागू किया गया था क्योंकि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सत्ता खोने से डरती थीं। कांग्रेस ने परिवार और वंशवाद की मदद के लिए संविधान में बेशर्मी से संशोधन जारी रखा। संशोधनों का उद्देश्य लोकतंत्र को मजबूत करना न होकर सत्ता में बैठे लोगों की रक्षा करना था।उन्होंने कहा, कांग्रेस ने उस दौरान इंदिरा गांधी की सत्ता बचाने के लिए ही संविधान में संशोधन किया था। सीतारमण ने कहा, कांग्रेस ने 1951 में संशोधन कर अभिव्यक्ति की आजादी पर कैंची चलाई। इसके बाद 1975 में इलाहाबाद हाई कोर्ट में राजनारायण का मामला लंबित होने के बावजूद कांग्रेस ने 39वें संशोधन के जरिए यह प्रावधान जोड़ दिया कि राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के निर्वाचन को कोर्ट में चुनौती नहीं दी जा सकती। इसके लिए ही किस्सा कुर्सी का बैन कर दिया गया। यह सब कांग्रेस की सोची-समझी साजिश थी।

वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा, कांग्रेस ने संविधान की प्रस्तावना में संशोधन कर सेक्यूलर और सोशलिस्ट शब्द जोड़ दिए गए। पूरे विपक्ष को जेल में डालकर ऐसा किया गया था। लोकसभा में उनके कुछ सदस्यों ने भी इसका विरोध किया था।उन्होंने कहा, कांग्रेस ने विपक्ष के सदस्यों को जेल में डालकर ही 42वां संविधान संशोधन किया था।

सदन में गूंजा सरकारी जमीनों की अफरा-तफरी का मुद्दा

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के शीतकालीन सत्र में पहले दिन प्रश्नकाल के दौरान सरकारी जमीन की अफरा-तफरी का मुद्दा सदस्यों ने उठाया. राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा ने शिकायतों की जांच कलेक्टर से कराने की आश्वासन दिया. प्रश्नकाल की कार्यवाही शुरू होते ही बेलतरा विधायक सुशांत शुक्ला ने बिलासपुर जिले में सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा का मुद्दा उठाया. कहा कि जिले के कई जगहों पर भूमि पर अवैध कब्जा हुआ है. इस पर राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा ने बताया कि 2021 से 2024 सरकारी भूमि पर कब्जे की 563 शिकायतें प्राप्त हुई. इस पर सदस्य ने सवाल किया कि कितने अफसरों पर कार्यवाही हुई. इस पर मंत्री ने कहा कि अभी पट्टा वितरण नहीं हुआ. पिछली सरकार में गलत ढंग से गलत पट्टा बंटा हो तो उसकी जांच कराएंगे. विधायक धरमजीत सिंह ने कहा कि सरकारी जमीन की अफरा-तफरी हुई है. इस पर राजस्व मंत्री टंक राम ने कहा कि शिकायतों की जांच कलेक्टर से कराएंगे।

विधानसभा में दिवंगत सदस्यों को दी गई श्रद्धांजलि

छत्तीसगढ़ विधानसभा शीतकालीन सत्र के पहले दिन की कार्यवाही दिवंगत राज्यसभा सदस्य गोपाल व्यास और अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व सदस्य नंदराम सोरी को श्रद्धांजलि देने के साथ शुरु हुई। विधानसभा अध्यक्ष डॉ.रमन सिंह ने सदन में दोनों दिवंगतों के निधन का उल्लेख किया. इसके साथ ही सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों ने सदन में श्रद्धांजलि दी.उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने दिवंगत गोपाल व्यास को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनका जाना हम सबके लिए अपूर्णीय क्षति है. उनका जीवन सभी कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणादायक रहेगा।

राज्यसभा में सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के बीच संविधान पर होगी बहस

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा में संविधान पर तीखी बहस के बाद सोमवार और मंगलवार को राज्यसभा में इस विषय पर चर्चा होगी।राज्यसभा में संविधान पर बहस सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव के बीच हो रही है, जिससे तनाव की आशंका बढ़ गई है।सत्ता पक्ष की ओर से भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा सुबह 11 बजे सदन शुरू होने के बाद बहस की शुरूआत करेंगे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी संविधान पर अपनी बात रखेंगे। शाह के अलावा सत्ता पक्ष की ओर से निर्मला सीतारमण, हरदीप सिंह पुरी, सुधांशु त्रिवेदी, भूपेंद्र यादव और बृजलाल बहस में हिस्सा लेंगे।विपक्ष की ओर से कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, जयराम रमेश के अलावा दिग्विजय सिंह और अन्य सांसदों के बहस में शामिल होने की उम्मीद है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को सदन में अपना जवाब देंगे।

101 रेल कर्मियों को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार, भारत मंडपम में आयोजित कार्यक्रम में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव करेंगे पुरस्कृत

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के 02 कर्मवीर अतिविशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार के लिए चयनित

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। भारतीय रेल द्वारा 101 कर्मचारियों और अधिकारियों को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है। चयनित कर्मचारी एवं अधिकारियों को रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा 21 दिसंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा।

चयनित अधिकारियों और कर्मचारियों में 15 रेल कर्मियों को नवाचार, रेल की आय में वृद्धि हेतु शानदार प्रयास, उत्पादकता में वृद्धि के लिए समर्पण और आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए एवं स्वदेशी तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है। 16 कर्मचारी एवं अधिकारियों को अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना दूसरों की जान एवं रेलवे की संपत्ति की रक्षा हेतु विशिष्ट कदम उठाने के लिए अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार दिया जा रहा है। 17 अधिकारियों और कर्मचारियों को रेल की आय बढ़ाने एवं टिकटलेस ट्रैवल एवं राजस्व की चोरी रोकने के प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है। रेल परिचालन, सुरक्षा और संरक्षा तथा रेलवे की परिसंपत्तियों के बेहतर संरक्षण हेतु अद्वितीय प्रयास करने हेतु 22 कर्मचारियों और अधिकारियों को पुरस्कृत किया जा रहा है जबकि 16 कर्मचारी एवं अधिकारियों को विभिन्न परियोजनाएं रिकॉर्ड समय में पूरा करने के लिए चयनित किया गया है। राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय खेल स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन कर भारतीय रेल का गौरव बढ़ाने वाले दो खिलाड़ियों को भी अति विशिष्ट रेल सभा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है। मेडिकल, कार्मिक, ट्रैक मेंटेनेंस आदि से जुड़े 13 अधिकारियों और कर्मचारियों को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है।

अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार हेतु चयनित कर्मचारी एवं अधिकारियों में सात सेंट्रल रेलवे के, तीन ईस्ट कोस्ट रेलवे के, पांच पूर्व मध्य रेल के, आठ पूर्व रेल के, पांच उत्तर मध्य रेल के, चार उत्तर पूर्व रेल के, दो पूर्वोत्तर रेल के, नॉर्दर्न रेल के 12, उत्तर पश्चिम रेल के चार, दक्षिण मध्य रेल के छ: दक्षिण पूर्व मध्य रेल के दो, दक्षिण पूर्व रेल के सात, दक्षिण रेल के आठ, दक्षिण पश्चिम रेल के चार, पश्चिम मध्य रेल के दो, पश्चिम रेल के आठ कर्मचारियों और अधिकारी शामिल हैं।

इस पुरस्कार के लिए चयनित दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रेलकर्मियों में (1) श्री राजेश कुमार तिवारी, सीनियर सेक्शन इंजीनियर (ट्रैक मशीन) (2) श्री हरीश कुमार बंजारे, सीनियर सेक्शन इंजीनियर (टीआरडी) शामिल हैं।

भारतीय रेल द्वारा चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स के एक कर्मचारी, डीएमडब्ल्यू के एक कर्मचारी, इंटीग्रल कोच फैक्ट्री के एक, एनएफआरसी के एक, रेल कोच फैक्ट्री के एक, आरडीएसओ के एक, रेल बिल फैक्ट्री के एक, रेल बिल प्लांट के एक और रेलवे बोर्ड के छ: अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, मंगलवार 17 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

निगम एमआईसी की बैठक में 11 एजेण्डों पर एजेण्डावार चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिये गये

रायपुर (विश्व परिवार)। आज नगर पालिक निगम रायपुर के मुख्यालय भवन महात्मा गांधी सदन के तृतीय तल सभाकक्ष में महापौर श्री एजाज ढेबर की अध्यक्षता एमआईसी सदस्य सर्वश्री ज्ञानेश शर्मा, श्रीकुमार मेनन, रितेश त्रिपाठी, सुन्दरलाल जोगी, समीर अख्तर, सहदेव व्यवहार, आकाश तिवारी, जितेन्द्र अग्रवाल, सुरेष चन्नावार, श्रीमती द्रौपती हेमंत पटेल, अपर आयुक्त सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, यु.एस. अग्रवाल, निगम सचिव एवं अपर आयुक्त श्री विनोद पाण्डेय, श्रीमती कृष्णा खटीक, सभी उपायुक्तगणों, जोन कमिष्नरों, सभी विभागों के प्रभारी अधिकारियों की उपस्थिति में हुई। एमआईसी की बैठक में नियमानुसार प्रक्रिया के तहत निर्धारित 11 एजेण्डों पर एजेण्डावार चर्चा एवं विचार विमर्श कर आवष्यक निर्देश संबंधित विभागों एवं अधिकारियों को दिये गये।

पीपला फाउंडेशन ने गौठान में रोपे त्रिगुण पौधे पीपल, बरगद, नीम, कहा- नगर में हरियाली लाना पीपला फाउंडेशन का लक्ष्य

आरंग (विश्व परिवार)। रविवार को नगर के स्वयंसेवी सामाजिक संगठन पीपला वेलफेयर फाउंडेशन ने घुमरा भांठा स्थित गौठान में त्रिगुण पौधे

पीपल, बरगद, नीम एक साथ रोपित कर हरियाली का संदेश दिया इस अवसर पर फाउंडेशन के अध्यक्ष दूजेराम धीवर ने कहा नगर में हरियाली लाना पीपला फाउंडेशन का लक्ष्य है। इसलिए हमारा फाउंडेशन नगर में लगातार पौधरोपण कर जनमानस को प्रेरित कर रहे हैं। वहीं फाउंडेशन के संयोजक महेन्द्र पटेल ने लोगों को पौधरोपण के साथ साथ उनके संरक्षण का विशेष ध्यान रखने अपील किया। साथ ही गौठान के गायों को डबलरोटी खिलाया ज्ञात हो कि यह संगठन नगर में पौधरोपण कर नगर को हरा भरा बनाने में लगातार भूमिका निभा रहे हैं। साथ ही लोगों को भी पौधरोपण व संरक्षण के लिए प्रेरित कर रहे हैं। पौधरोपण में फाउंडेशन के अध्यक्ष दूजेराम धीवर, संयोजक महेन्द्र कुमार पटेल, कोषाध्यक्ष कोमल लाखोटी, सचिव अभिमन्यु साहू, संयुक्त सचिव संजय मेश्राम, प्रतीक टोंड्रे, रमेश देवांगन, भागवत जलक्षत्री, दुर्गेश निर्मलकर, यादेश देवांगन, गौ सेवा समिति अध्यक्ष घनश्याम सिंह यादव, गजेन्द्र साहू, डिक्कू साहू आदि ने भाग लिया।

107 सार्वजनिक, सामुदायिक शौचालय के संधारण का आदेश जारी हुआ

भिलाई (विश्व परिवार)। नगर निगम भिलाई क्षेत्र के 107 स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शहरी सार्वजनिक शौचालय, सामुदायिक शौचालय के मरम्मत एवं उन्नयन के कार्य के लिए आयुक्त द्वारा आवश्यक शर्तों के तहत आदेश जारी किया। जिसमें प्रमुख रूप से सक्षम अधिकारी से तकनीकी स्वीकृति प्राप्त करके समय सीमा के अंदर गुणवत्ता पूर्वक निर्माण किया जाना अनिवार्य होगा। किसी भी प्रकार का सरवान परिवर्तन सक्षम अधिकारी के स्वीकृति के बिना नहीं किया जाएगा। नगर पाली निगम अधिनियम 1956 के अधीन प्राप्त शक्तियों के अंतर्गत विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए कार्रवाई की जाएगी। सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदित निविदा प्रारूप में ही निविदा आमंत्रित किया जाएगा, साथ ही विभाग द्वारा निविदा आमंत्रण के संबंध में समय-समय पर जारी दिशा निर्देशों का पालन करना अनिवार्य होगा। भारत सरकार, आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा स्वच्छ भारत मिशन शहरी स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 हेतु जारी दिशा निर्देशों में निहीत प्रावधानों का पालन करना अनिवार्य होगा। परियोजना का कार्य निकाय द्वारा समय सीमा में पूर्ण किया जाना सुनिश्चित किया जाएगा। उपरोक्त कार्य हेतु आमंत्रित निविदा में प्राप्त न्यूनतम दर का अनुमोदन एवं वित्तीय स्वीकृति शासन द्वारा जारी दिशा निर्देशों नियमों के अधीन प्रदान की जाएगी। कार्य के गुणवत्ता एवं मापदंड सुनिश्चित करने के लिए जोन के प्रभारी स्वच्छता अधिकारी एवं अभियंता द्वारा उसका निरीक्षण किया जाएगा। शासन द्वारा योजना अंतर्गत निर्माण लागत है अनुदान राशि की सत प्रतिशत स्वीकृति जारी की गई है। स्वीकृति उपरांत निकाय द्वारा अनुबंधित एजेंसी को कार्य आदेश जारी करने, कार्यस्थल पर कर प्रारंभ करने एवं निकाय से मांग पत्र प्राप्त होने के उपरांत सुडा द्वारा निकाय को प्रथम किस्त जारी की जाएगी। प्रथम किस्त की राशि जारी का उपयोगिता प्रमाण पत्र भौतिक स्थिति सत्यापित फोटोग्राफ देना अनिवार्य होगा। उपरोक्त शर्तों के अधीन आदेश जारी किया गया है। इससे भी हमारे शहर के शौचालय साफ सुथरा से व्यवस्थित रहेंगे। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने पार्षद गणों से भी अनुरोध किया है कि जिस वार्ड में शौचालय के संधारण का कार्य हो रहा है। वह भी उसके गुणवत्ता का एवं कार्य प्रणाली का जानकारी लेते रहे। जिससे काम समय पर पूर्ण हो होकर वार्ड के जनता के लिए सुगमता पूर्वक शौचालय उपलब्ध हो सके।

बीएलसी हितग्राहियों को अपना मकान शीघ्र पूरा करने के लिए आयुक्त ने प्रेरित किया

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत मोर जमीन-मोर मकान बीएलसी योजना के अंतर्गत मकान का निर्माण किया जा रहा है। इसमें जिन हितग्राहियों के पास खुद का भूखंड, पट्टा युक्त भूखंड, रजिस्ट्री सुधा भूखंड आदि रहता है। उन्हें शासन के नियमानुसार सेन्ट्रल गारमेंट से 1.50 लाख रूपये, राज्य सरकार से लगभग 75000 रूपये 4 समान किस्तो में प्रदान किया जाता है। पहला फाउंडेशन लेवल, दुसरा लिंटर लेवल, तीसरा रूफ लेवल, चैथा फिनिशिगं लेवल शेष राशि हितग्राही को स्वयं लगाकर अपना मकान बनाना रहता है। नगर निगम भिलाई क्षेत्र में ऐसे 130 से अधिक मकान निर्माणाधीन है। हितग्राही अपना मकान शुरू तो कर दिए हैं, पर आगे नहीं बना रहे हैं। नियमानुसार शासन का पैसा एक-एक स्तर पूरा करने के बाद मिलता है। आज उन सभी हितग्राहियों को बुलाकर के आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय द्वारा समझाया गया कि आप लोग अपने मकान को मार्च तक शीघ्र पूरा कर लेवे, नहीं तो आपकी शेष पैसा रुकने की संभावना है।

सभी बीएलसी योजना 2 मोर जमीन-मोर मकान के लिए शासन से प्राप्त दिशा-निर्देश अनुसार प्राप्त आवेदनो का आनलाईन एन्ट्री प्रधानमंत्री आवास योजना के वेब युनिफाइड पोर्टल में किया जाना है। आनलाईन एन्ट्री में आवेदक से ओटीपी लिया जाना है, आनलाईन एन्ट्री की प्रक्रिया निगम कार्यालय/ अनुबंधित वास्तविक के माध्यम से किया जा रहा है। अपना ओटीपी संबंधित निगम के अधिकारी को ही देवें, किसी बाहरी व्यक्ति को न देवें। जिससे गोपनीय जानकारी का दुरूपयोग न हो सके। आनलाईन एन्ट्री की प्रक्रिया नि:शुल्क है, आनलाईन एन्ट्री में आवेदक का आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र एवं भूमि संबंधी दस्तावेज अपलोड किया जाना अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिए नगर पालिक निगम भिलाई जोन क्रमांक 03 प्रधानमंत्री आवास योजना शाखा में संपर्क कर सकते है।

प्रधानमंत्री आवास योजना के घटक के अंतर्गत निर्मित आवासो के आबंटन हेतु किराये दारी के रूप में निवासरत परिवारो से निर्मित/निर्माणाधीन आवासो के आबंटन हेतु किराएदारो से आवेदन आमंत्रित किये गये है। उक्त स्थलो पर आवास आबंटन हेतु कुल 1018 आवेदन प्राप्त हुए है। आवेदनो की सूची एवं पूर्ण दस्तावेज संलग्न कर आवेदन जमा किये जाने आवेदको की सूची दावा आपत्ति हेतु मुख्य कार्यालय एवं जोन कार्यालय के सूचना पटल पर चस्पा किया गया है। जिसकी दावा आपत्ति तिथि बढ़ा दी गई है, जो अब 27.12.2024 निर्धारित की गई है। उसके पश्चात कोई भी दावा आपत्ति मान्य नहीं होगा। समय अवधि के अंदर अपने दावा आपत्ति का निराकरण करा लेवें। बैठक के दौरान नोडल अधिकारी डी. के. वर्मा, कार्यपालन अभियंता विनिता वर्मा, अभियंता नितेश मेश्राम, दीपक देवांगन सहित एजेंसी के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

वनस्पति विज्ञान की प्रायोगिक परीक्षा आज

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय दाऊ कल्याण महाविद्यालय के बी एस सी प्रथम सेमिस्टर नियमित एवं स्वाध्याई विषय वनस्पति विज्ञान (एलिमेंट्री बॉटनी) तथा बी ए प्रथम सेमिस्टर नियमित एवं स्वाध्याई वनस्पति विज्ञान (एलिमेंट्री बॉटनी G E) की प्रायोगिक परीक्षा 17 दिसंबर दिन मंगलवार को प्रात: 8 से 11 बजे बी एस सी प्रथम व 11.30 से 2.30 तक बी ए प्रथम वर्ष की परीक्षा संपन्न होंगी. विभागा ध्यक्ष वनस्पति शास्त्र ने बताया की परीक्षार्थी अपनी प्रायोगिक फ़ाइल के साथ निर्धारित समय से 15 मिनिट पूर्व महाविद्यालय मे अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें. अनुपस्थित रहने पर समस्त जवाबदारी सम्बंधित परीक्षार्थी की होंगी.

आईईडी ब्लॉस्ट में ग्रामीण की मौत, इलाके में दहशत का माहौल

दंतेवाड़ा-रायपुर (आरएनएस)। जिले से एक बड़ी खबर सामने आ रही है। बताया जा रहा है कि यहां आईईडी ब्लॉस्ट में एक ग्रामीण की मौत हो गई है। नक्सलियों ने यह बम जंगल में छिपाया था, इसकी चपेट में आने से ग्रामीण की मौत हो गई है। सूत्रों ने बताया कि इस घटना के बाद से ही इलाके में दहशत का माहौल है। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद जवान मौके पर पहुंच कर जांच-पड़ताल में जुट गए हैं। बताया जा रहा है कि ब्लॉस्ट बारसूर थाना क्षेत्र के जंगल में हुआ है। यहां नक्सलियों ने जवानों को नुकसान पहुंचाने के लिए आईईडी बम लगाया गया था।

गुरु घासीदास जयंती पर शुष्क दिवस घोषित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देश पर 18 दिसम्बर 2024 बुधवार को गुरु घासीदास जयंती पर एक दिवस के लिए शुष्क दिवस घोषित किया गया है। इस हेतु कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी दीपक सोनी ने आदेश जारी किया है जिसके तहत जिले में संचालित समस्त देशी, विदेशी, कम्पोजिट मदिरा की फुटकर दुकानों, आदि जैसे एफ.एल.-1 (घघ), सी.एस.-2 (घघ), सी.एस.-2 (घघ-कम्पोजिट), सी.एस.2 (ग-अहाता), सी. एस.2 (ग-कम्पोजिट अहाता), एफ.एल.1 (ख-अहाता) एवं मद्यभण्डारण-भाण्डागार को 18 दिसम्बर 2024 (कुल 01 दिवस) को संपूर्ण दिवस के लिये सीलबंद किया जाये।

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 615 दिनांक 13.12.2024
वार्ड का नाम- छत्रपति शिवाजी वार्ड
वार्ड क्र. 15 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 15 मांग **पंजी क्र. 146 युआईडी 18873** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **इतवारी सतनामी / साहेब दास** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **मनोहर बंजारे / श्याम लाल बंजारे** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **12-01-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 616 दिनांक 13.12.2024
वार्ड का नाम- छत्रपति शिवाजी वार्ड
वार्ड क्र. 15 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 15 मांग **पंजी क्र. 147 युआईडी 18874** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **कुमार बंजारे / श्याम लाल बंजारे** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **रामेश्वर बंजारे / श्याम लाल बंजारे** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **12-01-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
ई-निविदा सूचना
ई-निविदा नोटिस नं.: TRS-BIA-24-25-OHE-IL-17
कार्य का नाम: मेमू कार शेड, भिलाई में निरीक्षण एवं परीक्षण लाइनों पर ओएचई उच्च वोल्टेज विद्युत आपूर्ति (उपस्थिति / अनुपस्थिति) एलईडी संकेत प्रणाली का प्रावधान।
काम की लागत: ₹ 5,71,952/- (रुपये पांच लाख इकहत्तर हजार नौ सौ बावन मात्र), **बोली सुरक्षा/बयाना राशि जमा:** ₹ 11,500/- (रुपए ग्यारह हजार पांच सौ मात्र), **कार्य की पूर्णता अवधि:** स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से 03 (तीन) महीने। **निविदा समाप्ति की तिथि और समय:** दिनांक **10.01.2025** को **11:30** बजे। **वेबसाइट विवरण और निविदा के विवरण:** वेबसाइट **http://www.ireps.gov.in** पर देखे जा सकते हैं:
मंडल विद्युत अभियंता (मेमू),
PR/R/TRS/FL/185 द.पू.म. रेलवे, भिलाई
South East Central Railway @secrail

आम-सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 05.12.2024 को मेरा बैग गुम हो गया है, जिसमें मेरे निम्नलिखित दस्तावेज है, अगर किसी व्यक्ति को मेरा बैग प्राप्त होता है, तो नीचे दिये गए पते पर लौटाने का कष्ट करें :-
1. B.E. 1st to 8th semester marksheet
2. B.E Degree, vocational minor and major training certificate, Thesis of both the training.
3. M.tech Degree, Thesis
4. Aadhar card
5. Passport
6. Job experience letter and Raisoni college offer letter
7. provisional, character certificates
8. Domesile certificate
9. Rozgar panjiyan
10. voter I'd
11. All books, notes and study materials.Etc

Sheelu Dubey
LIG-2, Himalyan Height's
Devpuri, Raipur (C.G.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, जोन क्र. 06, रायपुर (छ.ग.)

-:: निविदा आमंत्रण सूचना ::-

क्रमांक 65 / न.पा.नि. / जोन क्रमांक - 06 / 2024 - 25 रायपुर दिनांक 15 / 12/ 2024

नगर पालिक निगम, रायपुर जोन क्रमांक 06 द्वारा निम्न कार्य हेतु निर्धारित एसओआर (निविदा दिनांक तक संशोधित) पत्र लोक कर्म विभाग पंजीकृत ठेकेदारों से (ई - रजिस्ट्रेशन **"डी"** एवं उससे ऊपर) / फार्म एवं संस्था / एजेंसी से दो लिफाफा पद्धति के (अनुसार लिफाफा **"अ"** में निविदा से संबंधित आवश्यक दस्तावेज एवं **"ब"** में निविदा प्रपत्र) सीलबंद निविदा पृथक - पृथक आमंत्रित की जाती है।

संबंधित कार्य का निविदा प्रपत्र प्राप्त करने हेतु दिनांक 31/12/2024 तक निर्धारित राशि सहित आवेदन कार्यालयीन अवधि में किया जा कर निविदा प्रपत्र प्राप्त किया जा सकता है। निविदा प्रपत्र एवं निविदा हेतु आवश्यक दस्तावेज दिनांक 07/01/2025 तक पंजीकृत डाक/स्पीड पोस्ट के माध्यम से सायं 5:00 बजे तक अधोहस्ताक्षर के कार्यालय में प्राप्त होना अनिवार्य है। प्राप्त निविदायें दिनांक 08/01/2025 को सुबह 11:30 बजे उपस्थित निविदायें अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जावेगी। निविदा आमंत्रित कार्य का विवरण निम्नानुसार है -

क्र.	कार्य का विवरण	निविदा का प्रकार	मद का नाम	अगणित राशि (लाख में)	अमानती राशि (राशि)	निविदा प्रपत्र मूल्य	एसओआर	समयवधि
1.	श. ब्रिगेडियर उस्मान वार्ड क्र. 63 अंतर्गत उत्कल समाज भवन उमंग कॉलोनी में अतिरिक्त निर्माण कार्य।	प्रथम	पार्षद निधि	2.37	2400.00	750.00	PWD Building SOR **01.01.2015**	3 माह
2.	श. ब्रिगेडियर उस्मान वार्ड क्र. 63 अंतर्गत पाईप लाईन लिकेज संधारण कार्य।	प्रथम	संधारण मद	1.98	2000.00	300.00	PWD SOR 2020	3 माह
3.	जोन क्रमांक 06 अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर पी.वी.सी. पानी टंकी एवं बस स्टैण्ड प्रदाय कर स्थापित करने का कार्य।	प्रथम	संधारण मद	3.84	3900.00	750.00	PWD Building SOR **01.01.2015** **PHE** SOR 2020	1 माह

कार्य के निविदा हेतु संलग्न की जाने वाली आवश्यक दस्तावेज निम्नानुसार है :-

लिफाफा "अ" में :-
(1) आयुक्त नगर पालिक निगम रायपुर के नाम से देय अमानती राशि का एफ.डी.आर (निविदा खोलने तिथि तक वैद्य होना चाहिए) मूलप्रति।
(2) प्रस्तुत दस्तावेजों की सत्यता एवं काली सूची में न होने बाबत् शपथ पत्र संलग्न करें।
(3) फर्म/एजेंसी के नाम का वैद्य पंजीयन की प्रति
(4) बैंक साल्वेंसी की प्रति
(5) जी.एस.टी. पंजीयन की प्रति
(6) 3 वर्षो का ITR एवं निविदा तिथि से 3 माह पूर्व का GSTR की प्रति।
लिफाफा "ब" में (1) निविदा प्रपत्र
शर्ते :- (1) उक्त लिफाफे रजिस्टर्ड डॉक / स्पीड पोस्ट से स्वीकार की जावेगी। (2) निविदा प्रपत्र प्राप्त करने तिथि में अवकाश होने पर आगामी तिथि को प्राप्त की जा सकती है एवं निविदा जमा करने एवं खोलने के तिथि में अवकाश हो जाने पर आगामी कार्यालयीन दिवस में कार्य संपादित की जावेगी। (3) ठेकेदार/फर्म एवं संस्था के द्वारा अंतिम भुगतान से पूर्व जी.एस.टी. विभाग से बकाया न होने संबंधी प्रमाण पत्र (Ta& Clearance Certificate) अथवा पूर्ण देय कर जमा किए जाने का प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाना होगा।

घरों से निकलने वाले गीला एवं सूखा कचरे को सफाई मित्र (वाहन) को देवें

जोन कमिश्नर
जोन क्रमांक 06
नगर पालिक निगम, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16358/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 16-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16358
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331C0191A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GOPAL MOHAN BHATNAGAR** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O BAKE BIHARI BHATNAGAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती राजेश्वरी भटनागर** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - स्व. श्री गोपाल मोहन भटनागर** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16610/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 16-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16610
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227M00220** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MRS. NEETA ASRANI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O LATE. PARAMANAND ASRANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. ARSHI BANO KHAN** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SHABBIR AHMED KHAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16639/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 16-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16639
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227S00393** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. BULBUL AGRAWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O NAVIN AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती सुमन स्वर्णकार** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति श्री अनिल कुमार स्वर्णकार** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16386/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 16-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16386
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227U00315** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **LOMESH KUMAR GUPTA** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O SITA RAM GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. SASMITA SAHOO** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SHREENATH SAHOO** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com
पत्र क्र. /16679/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 16-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16679
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C00364** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **LALIT KUMAR DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. BALARAM** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. RUKHMANI DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LEKHRAM DEWANGAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com
पत्र क्र. /16652/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 16-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16652
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568B00597** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAGHUNATH SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KISHAN SAHU** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **DEEPAK KUMAR YADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KEJU RAM YADAV** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com
पत्र क्र./15251/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 11-11-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 15251
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107E00234** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KRITIKA YADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KUNAL KUMAR YADAV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MAHENDRA KUMAR BAKHDA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANSUKH LAL BAKHDA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com
आम-सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी बोरियाकला, जिला रायपुर, में स्थित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत निर्मित **फ्लैट क्र. एल.आई.जी -309, ब्लॉक 20 प्रथम तल श्रीमती आशा प्रसाद पति श्री आर. प्रसाद निवासी:- एफ.सी.आई. कॉलोनी चंगोराभाठा, रायपुर तह व जिला-रायपुर (छ.ग.)** के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्र. **10884 दिनांक 03.11.2009** के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आंबटित है। आबंटी द्वारा भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 04.02.2010 को लीजडीड निष्पादित कराने के उपरांत पत्र कमांक 3351 दिनांक 09.05.2012 को आधिपत्य आदेश जारी किया गया है। **मूल आंबटी श्रीमती आशा प्रसाद पति श्री आर. प्रसाद, उक्त फ्लैट को विक्रय** अनुमति हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त फ्लैट को **क्रेता श्रीमती रीता मिश्रा पति श्री सुबोध कुमार मिश्रा निवासी: म.नं. ए-4, गणपति होम्स, गंगा विहार कॉलोनी, अमलीडीह रायपुर तह व जिला रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में विक्रय हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।
अत: किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन/फ्लैट के विक्रय करने हेतु अनुमति प्रदान करने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।
सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर छ.ग.

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर मंगलवार 17 दिसंबर 2024

शिक्षकों के कौशल उन्नयन के लिए एक दिवसीय मंथन स्मार्ट टीचर कार्यशाला का आयोजन सम्पन्न

शिक्षकों को बेहतर मार्गदर्शन मिलने से हमारे विद्यार्थियों का भी होगा सम्पूर्ण मानसिक विकास : भावना बोहरा

कवर्धा (विश्व परिवार)। शिक्षा, सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सुरक्षा एवं क्षेत्र के विकास हेतु लगातार पंडरिया विधायक भावना बोहरा द्वारा अपने विधानसभा क्षेत्र में सराहनीय प्रयास एवं पहल की जा रही है। क्षेत्रवासियों को उनकी रुचि अनुरूप शिक्षा एवं जानकारी प्राप्त करने हेतु विधानसभा के 75 ग्राम पंचायतों लाइब्रेरी स्थापना की घोषणा के बाद अब उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए उनके द्वारा मंथन स्मार्ट टीचर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन पीजी कॉलेज ऑडिटोरियम, कवर्धा में किया गया। इस कार्यशाला में खुद भावना बोहरा ने शिक्षकों के साथ संवाद कर विद्यार्थियों के बेहतर परिणाम लाने व शिक्षा को और बेहतर बनाने से लेकर उसमें सुधार व बेहतर मैनेजमेंट एवं स्मार्ट क्लास सहित विभिन्न विषयों पर अपने विचार साझा किए। इस दौरान अनुभवी व प्रख्यात कैरियर काउंसलर एवं साइकोलॉजिस्ट डॉ. अजीत वरवंडकर ने भी शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर भावना बोहरा ने कहा कि हमारे शिक्षकों के कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। वे क्षेत्र की प्रगति के साथ ही इसके सूत्रधार हमारे विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अथक परिश्रम करते हैं,उनके ज्ञान का विस्तार करते हैं। वर्तमान समय में हमारी शिक्षा आधुनिकता एवं टेक्नोलॉजी के साथ जुड़ रही है,ऐसे में हमारे शिक्षक भी स्मार्ट और टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर बच्चों को बेहतर शिक्षा के साथ ही अच्छे परिणाम भी हमें प्राप्त हो सकते हैं।आज इसी उद्देश्य से हमने मंथन स्मार्ट टीचर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें हमारे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ हमने संवाद किया। कैसे हम शिक्षा को तकनीक के माध्यम से बच्चों को पढ़ाई के लिए बेहतर वातावरण दें, क्लास रूम मैनेजमेंट, आगामी परीक्षा परिणामों को बेहतर बनाने व पाठ्यक्रम के संबंध में चर्चा की। इसके साथ ही नई शिक्षा नीति व शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के कौशल उन्नयन के संदर्भ में भी इस कार्यशाला में सार्थक संवाद हुआ है वहीं मुख्य वक्ता डॉ. अजीत वरवंडकर जी ने भी शिक्षकों का मार्गदर्शन किया और उनके मन मे निहित प्रश्नों और दुविधाओं का समाधान भी किया। भावना बोहरा ने आगे कहा कि ऐसे आयोजनों के माध्यम से हमारा प्रयास है कि हम शिक्षक व विद्यार्थियों के मध्य एक बेहतर सामंजस्य स्थापित कर सके। शिक्षकों को भी समय-समय पर वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं, पद्धतियों और पाठ्यक्रम को समय पर पूर्ण कर परिणामों को बेहतर लाने के संदर्भ में संवाद का यह एक अच्छा माध्यम है। हमें विश्वास है कि इस कार्यशाला के माध्यम से हमारे शिक्षकों को नए अनुभव प्राप्त होंगे जिससे हमारे आने वाली पीढ़ियों के भविष्य और भी उज्ज्वल होगा। इसके लिए हम ऐसे प्रयास निरन्तर करते रहेंगे। पूर्व संसदीय सचिव श्री सियाराम साहू ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में विधायक भावना बोहरा द्वारा निरंतर प्रयास किये जा रहें हैं। आज का भी यह कार्यक्रम अपने आप मे बहुत ही महत्वपूर्ण और अनूठा है जिसके लिए मैं उन्हें बहुत बहुत बधाई देता हूँ और ऐसे प्रयासों की जितनी सराहना की जाय वह कम है।

संक्षिप्त समाचार

कैंसर जागरूकता रैली को सीएमएचओ ने झंडी दिखाकर किया रवाना

कोरबा (विश्व परिवार)। कैंसर के जोखिम, जांच के महत्व और उपचार के विकल्पों के बारे में जागरूकता बढ़ाने लगातार काम किया जा रहा है। अपोलो कैंसर सेंटर बिलासपुर ने इस कड़ी में कोरबा में जागरूकता रैली निकाली। कैंसर जागरूकता मुहिम को स्वस्थ विभाग, पुलिस विभाग, कलेक्ट्रेट, शासकीय एवम् गैरशासकीय संस्थानों, शिक्षण संस्थाओं एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों को पूरा सहयोग मिला। कैंसर जागरूकता रैली को सीएमएचओ डॉक्टर एसएन केसरी ने झंडी दिखाकर रवाना किया। ओपन थिएटर से कोसाबादी होते हुए रैली वापस इसी स्थान पर पहुंची और मुख्य कार्यक्रम में परिवर्तित हुई । रैली में कोरबा राष्ट्रीय सेवा योजना के कैडेट्स, के ऐन कॉलेज, मिनीमाता शासकीय गर्ल्स कॉलेज, गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, शासकीय स्वस्थ विभाग, विभिन्न सामाजिक संगठनों, ब्रह्मकुमारीज आध्यात्मिक संगठन स्वस्थ मितानिनों एवं अपोलो के विभागाध्यक्ष एवं कर्मचारीयों की सहभागिता रहीं। डॉ. एस एन केशरी ने अपोलो की जागरूकता मुहिम को सराहनीय बताया एवं अपोलो कैंसर सेंटर की हिंदी स्व स्तन परीक्षण नोटबुक का विमोचन कर इसके महत्ता पर जोर दिया। अपोलो हॉस्पिटल के कैंसर सर्जन डॉ अमोल पड़ेगांवकर ने इस अवसर पर व्यावहारिक जानकारी दी और लोगों को जागरूक किया।

आसुरी शक्तियों का उत्पात हर कालखण्ड में रहा हावी

कोरबा (विश्व परिवार)। अगहन मास में अनेक स्थानों पर धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हो रहे है। ग्राम अंडीकछार के बुडगनिहापारा में श्रीवास समाज द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करने सनातन संघर्ष समिति के जिला संयोजक एवं सामाजिक कार्यकर्ता अजय कुमार दुबे एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोरबा के जिला कार्यवाह कैलाश नाहक विशेष रूप से उपस्थित हुए। पाली खंड के ग्राम अंडीकछार के बुडगनिहापारा में जगदीश श्रीवास एवं जगेश्वर श्रीवास के निवास स्थान में परिवार एवं समाज की सुख शांति के लिए श्री मद्भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें खरसिया वाले भगवताचार्य पंडित दीपक कृष्ण महराज के द्वारा भागवत कथा किया जा रहा है। सनातन संघर्ष समिति के जिला संयोजक अजय कुमार दुबे ने समाज के सनातनियों से मिलकर कहा कि समाज के कल्याण एवं सनातन धर्म के संवर्धन के लिए ऐसे आयोजन आवश्यक है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत चुनाव की तैयारी शुरू

कोरबा (विश्व परिवार)। ग्रामीण क्षेत्रों में भाजपा और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने पंचायत चुनाव की शुरूआत कर दी है। अभी तक चुनाव की घोषणा नहीं हुई और ना ही आरक्षण की घोषणा की गई है। कार्यकर्ता सिटों के आरक्षित होने का इंतजार कर रहे हैं। जिला पंचायत सदस्य उरगा क्षेत्र के लिए कई लोगों ने प्रयास तेज कर दिए हैं। इस क्षेत्र में कांग्रेस की ओर से रौशन खांडे, धरम खांडे, आशीष गांगुली, गोपी सारथी, वर्तमान सदस्य लखन लहरे तैयारी में जुटे हुए हैं तो दूसरी ओर भाजपा की ओर से प्रतीभा सोनवानी, कमलेश अनंत, रामचंद्र पाटले सहित अन्य लोग तैयारी कर रहे हैं। प्रतीभा सोनवानी भाजपा अजा मोर्चा की जिला मंत्री हैं और भाजपा महिला मोर्चा की नगर मंडल अध्यक्ष भी हैं। इन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा भी शुरू कर दिया है। लोगों से मुलाकात कर क्षेत्र की समस्याओं को जानने का प्रयास कर रही है।

धान खरीदी केंद्र से निरंतर धान का किया जा रहा उठाव

जशपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के निर्देशन में जिले में धान खरीद सुचारू रूप से हो रही है। धान खरीदी के एवज में 8289 किसानों को 1,02,19,99,480 रूपए (एक अरब दो करोड़ उन्नीस लाख निन्यानबे हजार चार सौ अस्सी) का विपणन संघ मुख्यालय द्वारा अपैक्स बैंक को किया गया है भुगतान 46 उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से हो रही है धान खरीदी इसके साथ ही तीव्र गति से धान उठाव प्रारम्भ किया गया है। और डीवो जारी किया गया 182560.00 क्विंटल धान उठाव 21700.00 क्विंटल जिले में 14 नवम्बर से अब तक 52080.92 मीट्रिक टन धान की खरीदी हो चुकी है। अब तक जिले के 8289 किसानों ने अपना धान बेचा है। धान खरीदी का यह अभियान 31 जनवरी 2025 तक जारी रहेगा। खाद्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस खरीफ वर्ष के लिए 51180 किसानों द्वारा पंजीयन कराया गया है। इसमें 6301 नए किसान शामिल है। इस वर्ष 46 उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से 3,36,458.00 मीट्रिक टन धान खरीदी अनुमानित है। अधिकारियों ने बताया कि 1 दिसम्बर तक 8289 किसानों से 52080.92 मीट्रिक टन धान खरीदी की गई है। इसके लिए आज दिनांक तक कुल 55723.28 मीट्रिक टन टोकन जारी किए गए थे।

जनसंपर्क विभाग के छायाचित्र प्रदर्शनी का उद्योग मंत्री सहित अन्य अतिथियों ने किया अवलोकन

जनादेश परब के उपलक्ष्य में विकास कार्यों, उपलब्धियों एवं नवाचारों पर आधारित लगाई गई प्रदर्शनी

कोरबा (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के कुशल नेतृत्व में प्रदेश सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जनादेश परब के अवसर पर जनसंपर्क कार्यालय द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर में जिले के विकास कार्यों, उपलब्धियों एवं नवाचारों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी लगाई गई। छत्तीसगढ़ शासन के वाणिज्य उद्योग व श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन ने विभाग द्वारा प्रदर्शित फेटो प्रदर्शनी का अवलोकन किया। छायाचित्र प्रदर्शनी के माध्यम से केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों के जीवन मे हुए सकारात्मक बदलाव सहित जिले के अनेक विकास कार्यों, उपलब्धियों, नवाचार के संबंध में छायाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत की गई।

वरिष्ठजनों को उनकी जरूरत के लिए मिला सियान सदन

कोरबा (विश्व परिवार)। काफी समय से जिस चीज की कमी महसूस की जा रही थी उसे प्रशासन की संवेदनशीलता से पूरा करने का काम कटघोरा नगर पालिका क्षेत्र में कर लिया गया है। क्षेत्र के वरिष्ठ जनों को उनकी जरूरत के लिए सियान सदन उपलब्ध करा दिया गया। नियमित रूप से कुछ घंटे निकाल कर वरिष्ठ जन यहां बैठेंगे, चर्चा करेंगे और अपने अनुभव से दूसरों को लाभान्वित करने में भूमिका निभाएंगे। कटघोरा के बेसिक स्कूल के पीछे स्थित गायत्री मंदिर के सामने वर्षों से बंद पड़े पुराने और जर्जर भवन को पुनर्निर्मित कर सियान सदन में परिवर्तित किया गया। इस कार्य को अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कटघोरा रोहित सिंह के निर्देश पर शुरू किया गया। नगर पालिका द्वारा भवन की सफाई, मरम्मत और रंग-रोगन का कार्य करवाया गया। शनिवार को इस सियान सदन का उद्घाटन कटघोरा विधायक प्रेमचंद पटेल ने किया। उन्होंने कहा सियान सदन में अब हमारे वरिष्ठजन अपनी विभिन्न गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से संचालित कर सकेंगे। वरिष्ठजनों के पास जो अनुभव का खजाना है, उसका लाभ हमारे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को मिलना चाहिए। यह पहल न केवल पुराने भवन का सदुपयोग सुनिश्चित करती है, बल्कि समाज के वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक समर्पित स्थान उपलब्ध कराती है, जिससे सामुदायिक विकास को भी बल मिलेगा।

नगर पंचायत बनने का सपना मुख्यमंत्री ने किया पूरा संवारने का काम भाजपा ही करेगी- लक्ष्मी राजवाड़े

भव्य समारोह में नगर पंचायत समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों को एसडीएम ने दिलाई शपथ

शपथ ग्रहण समारोह का स्थगन लेने हाई कोर्ट पहुंचने वाले लोग भी दिखे समारोह में

गोपाल सिंह विद्रोही

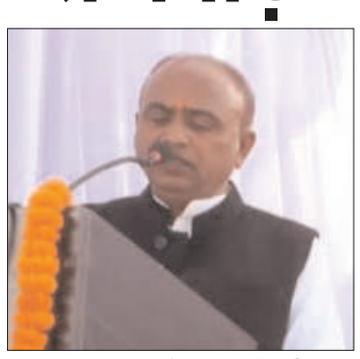

बिश्रामपुर (दैनिक अमर स्तंभ न्यूज़)- ग्राम पंचायत शिवनंदनपुर को नगर पंचायत बनाने की बहु प्रतीक्षित क्षेत्रवासियों की मांग को प्रदेश के तेजस्वी मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अभिलंब पूरा किया।जब मुख्यमंत्री ने नगर पंचायत बनाया है तो इसे संवारने का काम भाजपा एवं प्रदेश की सरकार ही करेगी। नगर पंचायत शिवनंदनपुर का सर्वांगीण विकास के लिए हम पीछे नहीं रहेंगे। एक उत्तम सर्वोत्तम एवं बेहतरीन नगर पंचायत शिवनंदनपुर बने इसके लिए इस नगर पंचायत शिवनंदनपुर को किसी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे।हम इसे बेहतरीन नगर पंचायत के रूप में देखना चाहेंगे यह सभी संभव है जब हम आप सब आपसी मतभेद को भूला कर कंधे से कंधे मिला कर काम करेंगे ।विरोध अपने स्थान पर है सहयोग भी सबसे महत्वपूर्ण होता है हम सब नगर पंचायत शिवनंदनपुर की समस्त समस्याओं को दूर करते हुए इसे बेहतरीन नगर पंचायत को बनाकर यहां के लोगों के सपनों को साकार करेंगे । उक्त उद्गार प्रदेश की महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने नगर पंचायत शिवनंदनपुर अध्यक्ष एवं समिति सदस्यों को शपथ ग्रहण समारोह की दौरान कही।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल अग्रवाल ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय एवं महिला बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े जी का सबसे प्रिय यह नगर पंचायत होगा। आप सभी का सपना आज साकार हुआ है। आप नवनियुक्त नगर पंचायत अध्यक्ष के के अग्रवाल बालू को सहयोग प्रदान करें ताकि आप लोगों की उम्मीद पर ये खरा उतर सके। पूर्व गृह मंत्री रामसेवक पैकरा ने कहा कि नगर पंचायत बनने पर आप सभी को बधाई ।शासन की जो भी योजनाएं बनेगी आप सभी को तुरंत लाभ मिलेगा। नगर पंचायत का विकास होगा इसके लिए हम सब मिलजुलकर प्रयास करेंगे।

शकार्यक्रम में उपस्थित जनप्रतिनिधियों को नगर पंचायत बनाए जाने पर शुभकामनाएं देते हुए एसडीम शिवानी जायसवाल ने नगर पंचायत निर्माण एवं शपथ ग्रहण समारोह के विषय में विस्तृत जानकारी दी ।कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालन से पूर्व प्रदेश के महिला बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंचासीन अतिथियों में भाजपा के वरिष्ठ नेता चरण सिंह, अग्रवाल बनारसी जायसवाल,विजय राज अग्रवाल दीपेंद्र सिंह चौहान, कांग्रेस नेता रमेश दानोदिया ,नगर पंचायत बिश्रामपुर अध्यक्ष आशीष यादव, चंदन सिंह ,विकास सिंह, पार्षद अमरेश प्रसाद, रामानंद जायसवाल ,ललित गोयल, अशोक अग्रवाल,दीपेंद्र सिंह चौहान ,अशोक सिंह ,मुरली सोनी ,संजीत सिंह ,संदीप अग्रवाल ,शशि गर्ग ,देव धन बिझिया,अंबिकापुर के संजय मित्तल ,रितेश जायसवाल , मंशा सिंह आदि थे ।कार्यक्रम का संचालन गौरी शंकर पांडे ने किया ।कार्यक्रम को सफल बनाने में तहसीलदार श्रीमती मीना सिंह,सीएमओ सुशील तिवारी , सचिव धनेश्वर प्रजापति, अभियंता तरंग मित्तल, ललन सिंह का महत्वपूर्ण योगदान था

एसडीम शिवानी जायसवाल ने अध्यक्ष एवं समिति सदस्यों को दिलाई शपथ- नवगठित शिवनंदनपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष समिति सदस्यों को दिलाई शपथ- सूरजपुर एसडीम शिवानी जायसवाल ने नवगठित शिवनंदनपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष के के बलू अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्यामू साहू, सदस्य क्रमश: सीती कांत स्वाई, मनी बग्गा,धर्मेंद्र गुप्ता ,श्रीमती प्रमिला साहू ,अनीता सिंह , को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

मंत्री ने मेधावी छात्रा चारुल गर्ग एवं पत्रकारों को सम्मानित किया- प्रदेश की महिला बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने विश्रामपुर की मेधावी छात्रा चारुल गर्ग पिता अनिल गर्ग जो सीजीपीएससी में छत्तीसगढ़ रैंक प्रकार नगर को गुरबाणी किया है उन्हें शॉल श्री फल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया इसी प्रकार वरिष्ठ पत्रकार अशोक गुप्ता ,गोपाल सिंह विद्रोही सहित वेद प्रकाश मिश्रा ,जानू बग्गा ,मिथिलेश जायसवाल ,सुशील सिंह ,एजाज खान इमाम हसन राजेंद्र पासवान,सूरज साहू आदि को शॉल श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

आपसी मतभेद भूल कर सभी ने किया मंच साझा- नवगठित शिवनंदनपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष एवं समिति सदस्यों के शपथ ग्रहण समारोह का विरोध करने वाले ग्राम पंचायत के कुछ पूर्व जन प्रतिनिधियों ने शपथ ग्रहण समारोह का विरोध करते हुए कलेक्टर को भी पत्र लिखा था तथा समारोह का का बहिष्कार करने का निर्णय लिया था जिसे संज्ञान में लेते हुए जिला प्रशासन ने भारी संख्या में पुलिस बल तैनात की थी परंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ विरोध करने वाले दूर-दूर तक नजर नहीं आए अपितु वे शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होकर नए अध्यक्ष को बधाई देते हुए नजर आए।

सरपंच को उकसा कर हाई कोर्ट भेजने वाले भाजपा- कांग्रेस पार्टी नेता खुद पहुंचे समारोह में- यहां बताना आवश्यक है कि सरपंच विमला देवी को उकसाकर हाईकोर्ट शपथ ग्रहण स्थगन के लिए भाजपा एवं कांग्रेस के जनप्रतिनिधि समारोह कुछ ना कुछ अपना दलील देकर समारोह में शामिल हुए परंतु न तो सरपंच विमला देवी पहुंची और नहीं उनके पति रामनारायण सिंह । ग्राम पंचायत शिवनंदनपुर को नगर पंचायत का विरोध करने वाले मंठू राम शांडिल्य भी नजर नहीं आए।

शपथ ग्रहण समारोह में भारी संख्या में पहुंचे गणमान्य नागरिक- नगर पंचायत के अध्यक्ष एवं समिति सदस्यों के शपथ ग्रहण समारोह में नगर के गणमान्य नागरिको में बाबूलाल गोयल, सज्जन अग्रवाल,महेंद्र गर्ग , के के जिंदल, सतपाल तायल, शशि नानू अमरलाल साहू ,मुरली मनोहर सोनी, पोनी अग्रवाल,सहित जनप्रतिनिधियों में की के जिंदल, सुशील जैन , बाबूलाल गोयल , अमित गोयल, समीर सिंह, श्यामा पांडे ,ज्योति सिंह, मोहनी झा ,हनुमान रही, के बी विनय सिंह ,मलय नंदी, कमलेश चौबे, गुड्डू ठाकुर ,अश्वनी उपाध्याय, समीर सिंह प्रिंस प्रसाद आदि शामिल थे।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर मंगलवार 17 दिसंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

सभी पक्ष गंभीर पहलू पर विचार करें.....

यह बात शायद ही किसी के गले उतरेगी कि दोनों सदनों में संविधान के 75 साल पूरा होने के मौके पर दो-दो दिन की बहस या समाजवादी पार्टी को संभल के मुद्दे पर बोलने का मौका देना सरकार का झुकना है। संसद की कार्यवाही ना चलने देने के मुद्दे पर आखिरकार सरकार अपनी मनवाने में सफल रही। यह संभव हुआ, क्योंकि विपक्षी दलों के बीच रणनीति को लेकर बिखराव हो गया। अडानी और मणिपुर जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर बहस के लिए सरकार को मजबूर करने की कांग्रेस की प्राथमिकता से क्षेत्रीय दलों के मतभेद इतने गहराए कि वह अलग-थलग पड़ गई। उन दलों की अपनी प्राथमिकताएं हैं, जिन्हें सदन में उठाकर अपने समर्थक तबकों को वे संदेश देना चाहते हैं। वैसे भी किसी बड़े पूंजीपति के मुद्दे पर एक सीमा से ज्यादा जोर देना ज्यादातर दलों को अपने माफिक नहीं लगता। यह बात शायद ही किसी के गले उतरेगी कि दोनों सदनों में संविधान के 75 साल पूरा होने के मौके पर दो-दो दिन की बहस या समाजवादी पार्टी को संभल के मुद्दे पर बोलने का मौका देना सरकार का झुकना है। संविधान के लिए भारतीय जनता पार्टी सरकार को खतरा बताने की विपक्ष- खासकर कांग्रेस की रणनीति वैसे भी परवान नहीं चढ़ी है। हकीकत यह है कि संविधान को आरक्षण के समानार्थी बताते हुए इसके रक्षक के रूप में खुद को पेश कर विपक्ष ने भी इस मुद्दे के साथ न्याय नहीं किया है। पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधित्व एवं पहचान के मुद्दे पर भाजपा को घेरना एक भटकी रणनीति साबित हुई है। इसीलिए इसका चुनावी लाभ भी ये दल नहीं उठा पाए हैं। चूंकि विपक्षी दल अपनी एकता के लिए बड़े साझा मकसद की तलाश नहीं कर पाए हैं, इसलिए संसदीय गतिरोध की रणनीति का जो हश्र हुआ, उसका अनुमान लगाया जा सकता था। बहरहाल, बड़ा सवाल यह है कि देश के सामने जो सबसे ज्वलंत मुद्दे हैं, संसद में उन ही बहस नहीं होगी, तो फिर प्रभावित एवं पीड़ित लोगों की निगाह में इस मंच का क्या महत्त्व रह जाएगा? संसद की प्रमुख भूमिका बेशक विधायी कार्यों को निपटाना है, मगर यह राष्ट्रीय चिंताओं और जन आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का मंच भी है। ऐसी अभिव्यक्तियों के अवसर को सीमित करना लोकतंत्र के लिए अच्छी खबर नहीं है। बेहतर होगा, सभी पक्ष फौरी हार-जीत की मानसिकता से उठ कर इस गंभीर पहलू पर विचार करें।

आलेख

पर्वत बचेंगे तभी मानव सभ्यता संस्कृति और सेहत का बचाव

अखिलेश आर्येन्दु

भारत सहित दुनिया के तमाम देशों में पर्वत देवता के रूप में पूजे जाते रहे हैं, लेकिन पहाड़ों के बेतहाशा दोहन से कई समस्याएं पैदा हुई हैं। हम भूल गए कि पहाड़ों के संरक्षण, सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी है। जलवायु परिवर्तन पर अंतरसरकारी पैनल के अनुसार 84 प्रतिशत स्थानीय पर्वतीय प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर हैं। संयुक्त राष्ट्र दशक 2021-30 प्रकृति की गिरावट रोकना और वापस लाना दस साल की कोशिश है। जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर धरती, पर्वत और हवा पर पड़ा है। धरती तेजी से गर्म हो रही है। मौसम असंतुलित हो गया है। प्राकृतिक आपदाएं ज्यादा देखी जाने लगी हैं। पर्वतों का दोहन इतना अधिक किया गया कि दूसरी तमाम तरह की प्राकृतिक दुर्घटनाएं और समस्याएं आए दिन होने लगी हैं। पर्वतों के दोहन को बचाने और पर्वतों के महत्त्व को समझाने के मकसद से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2002 को 'अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस' मनाने की घोषणा की। हर साल 11 दिसम्बर को अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाए जाने का मकसद पर्वतों का संरक्षण, सुरक्षा और उनके दोहन को रोकना है। जाहिर है पर्वत और इंसान का रिश्ता बहुत पुराना है। उतना पुराना जितना मानव सभ्यता। धरती का 27 प्रतिशत हिस्सा पहाड़ों से ढका हुआ है। दुनिया के पंद्रह प्रतिशत आबादी का घर पहाड़ हैं, और दुनिया के लगभग आधे जैव विविधता वाले हॉटस्पाट की मेजबानी भी पहाड़ करते हैं। दुनिया की आधी आबादी के रोजमर्रा की जिंदगी बसर के लिए पानी उपलब्ध कराने का कार्य पहाड़ करते हैं। कृषि, बागवानी, पेय जल, स्वच्छ ऊर्जा और दवाओं की आपूर्ति पहाड़ों के जरिए होती है। दुनिया के अस्सी प्रतिशत भोजन की आपूर्ति करने वाली बीस पौधों की प्रजातियों में से छह की उत्पत्ति और विविधता पहाड़ों से जुड़ी है। आलू, जौ, मक्का, टमाटर, ज्वार, सेब जैसे उपयोगी आहारों की उत्पत्ति पहाड़ हैं। हजारों नदियों के स्रोत पहाड़ हैं। भारत में नदियों को ही पूजा नहीं जाता, बल्कि अनेक पहाड़ों की पूजा भी की जाती है। तमाम चमत्कारिक घटनाएं पहाड़ों से जुड़ी हैं। तमाम तरह की सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पहाड़ों से जुड़ी हैं। इसलिए पहाड़ों का संरक्षण हमारा कर्तव्य है। सृष्टि-उत्पत्ति के साथ सागर और पहाड़, दोनों मानवता के विकास के आधार रहे हैं, लेकिन जैसे-जैसे नई सभ्यता और संस्कृति के साथ विज्ञान का विकास होता गया वैसे-वैसे पहाड़ और सागर, दोनों प्रदूषित किए जाने लगे। आज हालत यह हो गई है कि पहाड़ और सागर, दोनों का वैभव खत्म होता जा रहा है। जैसे-जैसे वैश्विक जलवायु गर्म होती जा रही है, पर्वतीय ग्लेशियर पिघल रहे हैं। इससे जैव विविधता पर ही असर नहीं पड़ रहा, बल्कि ताजे पानी की उपलब्धता और औषधियां भी लुप्त हो रही हैं। पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र बढ़ते प्रदूषण की वजह से खतरे में है यानी दुनिया भर में पर्वतों को संरक्षण देने की जरूरत है। पर्वत हमारे लिए कितने उपयोगी हैं, इसे वह समुदाय सबसे ज्यादा जानता है जिसकी रोजमर्रा की जिंदगी की हर कवायद पर्वतों से जुड़ी है। यूं तो पहाड़ों के संरक्षण को लेकर विश्व का ध्यान 1992 में गया जब पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन में एजेंडा 21 के अध्याय 13 'नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र का प्रबंधन = सतत पर्वतीय विकास' पर जोर दिया गया। अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाने से पिछले दस सालों में पर्वतीय पर्यटन तेजी से बढ़ा है लेकिन इसका नुकसान भी देखा गया है। पर्यटकों की लापरवाही से पर्यावरण का नुकसान हुआ और पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र के कमजोर पड़ने का खतरा बढ़ा है। पहाड़ी इलाकों के निवासियों को रोजगार जंगल और पहाड़ से मिलता है। खासकर महिलाओं के लिए पहाड़ किसी खेती से कम नहीं हैं। युवाओं के लिए पर्वतीय जैव विविधता का संबंध आज अधिक विसनीय है क्योंकि कलाकृतियों के संरक्षण, मूर्तिकला और बेहतर स्वास्थ्य पहाड़ों के स्वच्छ पर्यावरण से ताल्लुक रखता है। आजीविका और प्राकृतिक आहार पहाड़ों से जितना अच्छा मिलता है, उतना शायद और कहीं से नहीं मिलता। ईधन, औषधियों और लता वाली तरकारियां पहाड़ के दरे में उगती हैं। तमाम जीव-जंतुओं के आवास स्थल पहाड़ हैं। पहाड़ों के दोहन या क्षरण का मतलब जीव-जंतुओं, बहुमूल्य वनस्पतियों, औषधियों और खनिज-रत्नों से महरूम होना है। हिमाचल प्रदेश में 11-12 जिलों में कुदरत के कहर से पहाड़ का पोर-पोर धंस रहा है।

प्रकाश मनु की कविता,कहानी और साहित्य की पुस्तकों का साहित्य अकादेमी के पुस्तकायन पुस्तक मेले में हुआ विमोचन

नई दिल्ली (विश्व परिवार) । साहित्य अकादेमी के पुस्तकायन पुस्तक मेले में शनिवार को संधीस पब्लिकेशन के स्टाल पर साहित्य अकादेमी का पहला बाल साहित्य पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं संपादक प्रकाश मनु की तीन पुस्तकों 'मैंने किताबों से घर बनाया है' (कविता-संकलन), 'एक बूढ़े आदमी के खिलौने' (कहानी-संग्रह)

और 'हिंदी के शिखर साहित्यकार : यादें और यादें' (संस्मरण) का लोकार्पण हुआ। इस मौके पर प्रकाश मनु के अलावा उनकी पत्नी वरिष्ठ लेखक डॉक्टर सुनीता, वरिष्ठ कवि व साहित्यकार दिविक रमेश, वरिष्ठ पत्रकार व साहित्यकार अरविंद कुमार सिंह, जनसत्ता वरिष्ठ पत्रकार अमलेश राजू, शोधार्थी बबीता यादव, जितेन्द्र भारद्वाज, नया इंडिया के पत्रकार विनय यादव, पत्रकार धीरेन्द्र यादव, वरिष्ठ साहित्यकार श्याम सुशील, देवेन्द्र सत्यार्थी की दोनों बेटियां, सुरेश्वर त्रिपाठी,

संधीस पब्लिकेशन के प्रबंध निदेशक हरिकृष्ण यादव और संपादक उमाशंकर कुकरेती मौजूद थे। इन पुस्तकों में कविता-संकलन, कहानी-संग्रह और हिंदी के शिखर तेरह साहित्यकारों की यादें हैं ।

खबर की शुरुआत उन्हीं एक कविता से करना सबसे बेहतर होगा-

तुम्हारी दुनिया में एक छोटा आदमी हूँ मैं
पर छोटे आदमी की भी एक दुनिया होती है
उस दुनिया में बड़े-बड़े विकराल मगरों जैसे
धन-पशुओं का आना मना है,
उस दुनिया में कलफदार घमंडी लोग सिर झुकाकर आते हैं
और चलती है ऐसी हवा
कि सीधे-सादे सरल लोगों के दिल की कली खिल जाती है ।

ये पंक्तियाँ प्रकाश मनु के नवीनतम कविता संग्रह 'मैंने किताबों से घर बनाया है' की एक सशक्त और उचित दृष्टि संपन्न कविता 'एक कवि की दुनिया' से है। यह कविता वस्तुत: इस संग्रह का प्रवेश-द्वार भी कही जा सकती है ।

अंतत: कविता-संकलन 'मैंने किताबों से घर बनाया है' तैयार हुआ, जिसमें पिछले पच्चीस वर्षों की लंबी अवधि में लिखी गई कविताओं में से मेरी सर्वाधिक प्रिय और चुनिंदा कविताएँ एक साथ आ रही हैं । कुछ थोड़ी सी पहले की भी लीक से एकदम अलग लिखी गई कविताएँ साथ चली आई, जिनके आकर्षण को मैं छोड़ नहीं पाया ।

संग्रह की बहुत ही जरूरी कविताओं में 'एक कवि की दुनिया', 'सीता की रसोई', 'मैंने किताबों से एक घर बनाया है', 'एक बूढ़े मल्लाह का गीत', 'हमारी दुनिया में एक सीधा आदमी', 'घर की मल्लिका', 'चलो ऐसा करते हैं', 'छोटी बेटी नन्ही की पंद्रहवीं वर्षगाँठ पर', 'बेटी जो गई है काम पर', 'दोस्त

चित्रकार हरिपाल त्यागी के लिए', 'धूप में पुश्किन के साथ कुछ दिन', 'मोगरे के फूल', 'ययाति', 'हत्यारे', 'राम-सीता', 'मेरे नन्हे पौधो', 'वह आँसू', 'हाँ-हाँ उठाओ पत्थर', 'रेलगाड़ी के डब्बे में अकेला रोता एक आदमी', 'विष्णु खरे के लिए कविता जैसा कुछ', 'सब कुछ जाने के बाद', 'नदी सपने में रो रही थी', 'हमारी कहानी तो बस यहीं खत्म होती है', 'एक अजन्मी बेटी का खत' और 'अभी मैं नहीं मरूँगा' आदि तो अवश्य हैं। यों कितनी ही और कविताएँ भी गिनाई जा सकती हैं ।

अलबत्ता, 'एक बूढ़े आदमी के खिलौने' (कहानी-संग्रह) में कोई पचास बरस लंबी कथा-यात्रा में से चुनी हुई ऐसी नौ कहानियाँ पाठकों को एक साथ पढ़ने को मिलेंगी, जिन्हें साहित्य जगत में खासा सराहा गया । साथ ही सतरों के बीच की खाली जगहों में मेरे जीवन की कही-अनकही वह मर्मकथा भी, जो शायद सीधे-सीधे कही ही नहीं जा सकती थी । ऐसी ही सुखद आश्चर्य से भरी प्रतिक्रियाएँ 'आप कहाँ हैं जित्ते सर' के बारे में सुनने को मिलीं । पाठक उनके बारे में मुझसे बहुत कुछ और भी जानना चाहते थे, और उन्हें हैरानी थी, आज के जमाने में भी जित्ते सर जैसे लोग हैं, हो सकते हैं !'एक बूढ़े आदमी के खिलौने', 'उस कस्बे की अचरज-कथा', 'जादू', 'तुम भी एक कहानी बन गए नंदू भैया', 'आखिरी सलाम', 'एक सुबह का महाभारत', 'काली आँधियाँ और एक वह', 'मिसेज मजूमदार' भी अलग-अलग दौर में लिखी गई मेरी अत्यंत चर्चित कहानियाँ हैं, जिन्हें पाठकों का बेतरह प्यार मिला । बचपन में अधकू की कहानी मैं बार-बार सुनता था । सुनते हुए हर बार लगता था, कोई शरीर से दुर्बल है तो भी मन से बड़ा हो तो रास्ते निकलते हैं, और विपत्तियाँ झुकती हैं । मैं भी शरीर से दुर्बल था, पर मन बड़ा था । इसलिए अधकू मुझ पर छा गया । बाद में लिखना शुरू किया तो सोचता था, कि लिखूँगा तो चीजें बदलेंगी । कुछ थोड़े से लोग तो होंगे जो पढ़ेंगे और अंदर तक महसूस करेंगे। बहुत ज्यादा नहीं, तो दो-चार ही सही । बहुत है । किसी एक ने भी उसी भाव से पढ़ा, जो भाव कहानी लिखते समय आपके भीतर जनमा था, तो यही बहुत है । और ऐसा होता है...! यही शायद सच्चाई की ताकत है । यही लेखन की ताकत और सार्थकता भी है । अपनी कोई पचास बरस लंबी कथा-यात्रा पर निगाह डालता हूँ तो मन में संतोष के साथ ही एक विस्मयजनक आह्लाद का भाव उपजता है । इसलिए भी कि मेरी कहानियाँ कहानी के बने-बनाए रास्ते पर चलने से एकदम शुरू से ही इनकार करती रही हैं । मेरे कथा-गुरु दिग्गज कथाशिल्पी देवेंद्र सत्यार्थी ने शुरुआती दौर की लिखी मेरी 'यात्रा' कहानी सुनने के बाद जिस तरह मुग्ध और अभिभूत होकर आशीर्वाद दिया था और कहानियाँ लिखने की अपनी ही लीक पर चलते रहने का जो बल दिया था, उसे भूल पाना असंभव है । 'हिंदी के शिखर साहित्यकार : यादें और यादें' (संस्मरण) में लंबे समय से मेरे संस्मरण पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे हैं । प्रकाश मनु के मुताबिक बहुत से मित्रों और आत्मीय जनों की इच्छा थी कि ये पुस्तक रूप में उपलब्ध हो सकें, तो उन्हें एक साथ इन संस्मरणों को पढ़ना अच्छा लगेगा। उन्हीं के आग्रह पर इन संस्मरणों को पिरोकर पुस्तक तैयार की है ।'हिंदी के शिखर साहित्यकार : यादें और यादें' मेरे ताजा संस्मरणों की पुस्तक है, जिसे पढ़कर आपको हिंदी के बड़े साहित्यकारों को निकट से देखने और रू-ब-रू होने का सुख मिलेगा । हालाँकि पुस्तक की सीमा को देखते हुए बहुत से संस्मरण रोकने पड़े। संभवत: जल्दी ही मेरे संस्मरणों की अगली पुस्तक में वे आपको पढ़ने को मिलेंगे । एक बात और । इन संस्मरणों में कहीं न कहीं मेरे आत्म की छाया है, जो कहीं-कहीं बहुत गहगही हो गई है। कह सकते हैं, इन संस्मरणों में मेरी आत्मकथा भी है। इसलिए कि जीवन की जिन ऊबड़-खाबड़ राहों पर चलते-चलते इन बड़े साहित्यकारों से मिलने का सुयोग मिला, उनका जिक्र किए बिना शायद मैं खुलकर अपनी बात कह ही नहीं सकता था। लिहाजा इन संस्मरणों में मेरा हृदय बहा चला आता है । इन्हें लिखते समय साहित्यिक समीक्षा या कृतियों के बुद्धिवादी मूल्यांकन से मैंने खुद को जान-बूझकर दूर ही रखा है। यों भी संस्मरण मेरे खयाल से हृदय से हृदय का सीधा संवाद हैं, जो बौद्धिकता के भार को सँभाल नहीं पाते । आप कह सकते हैं कि मोटे तौर से ये तीन तारों से बुने गए संस्मरण हैं । इनमें पहला तार बेशक इन साहित्यिक नायकों की शख्सियत का है तो दूसरा तार मेरे आत्म का है, जिसकी रोशनाई से ये सामने आए हैं और तीसरा तार समय का है, जो इन पुरानी स्मृतियों को अनायास किसी कथा-कहानी की तरह गूँथता चलता है ।

हालाँकि यह सब बहुत आकस्मिक रूप से होता है, जिस पर एक लेखक के रूप में शायद मेरा भी बहुत अधिक बस नहीं है । इस लिहाज से मेरी कविताओं की तरह ही ये संस्मरण भी लिखे नहीं गए, बल्कि कहीं अंदर से बह निकले हैं । हालाँकि जब-जब पीछे अतीत पर नजर डालता तो कहीं न कहीं एक गूँज भी मन में उठती है कि मेरे ये संस्मरण एक अर्थ में मेरी लंबी साहित्यिक यात्रा के पड़ाव भी हैं । पाठक उनके बारे में मुझसे बहुत कुछ और भी जानना चाहते थे, और उन्हें हैरानी थी, आज के जमाने में भी जित्ते सर जैसे लोग हैं, हो सकते हैं !'एक बूढ़े आदमी के खिलौने', 'उस कस्बे की अचरज-कथा', 'जादू', 'तुम भी एक कहानी बन गए नंदू भैया', 'आखिरी सलाम', 'एक सुबह का महाभारत', 'काली आँधियाँ और एक वह', 'मिसेज मजूमदार' भी अलग-अलग दौर में लिखी गई मेरी अत्यंत चर्चित कहानियाँ हैं, जिन्हें पाठकों का बेतरह प्यार मिला । बचपन में अधकू की कहानी मैं बार-बार सुनता था । सुनते हुए हर बार लगता था, कोई शरीर से दुर्बल है तो भी मन से बड़ा हो तो रास्ते निकलते हैं, और विपत्तियाँ झुकती हैं । मैं भी शरीर से दुर्बल था, पर मन बड़ा था। इसलिए अधकू मुझ पर छा गया । बाद में लिखना शुरू किया तो सोचता था, कि लिखूँगा तो चीजें बदलेंगी । कुछ थोड़े से लोग तो होंगे जो पढ़ेंगे और अंदर तक महसूस करेंगे। बहुत ज्यादा नहीं, तो दो-चार ही सही। बहुत है। किसी एक ने भी उसी भाव से पढ़ा, जो भाव कहानी लिखते समय आपके भीतर जनमा था, तो यही बहुत है। और ऐसा होता है...! यही शायद सच्चाई की ताकत है। यही लेखन की ताकत और सार्थकता भी है ।

अपनी कोई पचास बरस लंबी कथा-यात्रा पर निगाह डालता हूँ तो मन में संतोष के साथ ही एक विस्मयजनक आह्लाद का भाव उपजता है। इसलिए भी कि मेरी कहानियाँ कहानी के बने-बनाए रास्ते पर चलने से एकदम शुरू से ही इनकार करती रही हैं। मेरे कथा-गुरु दिग्गज कथाशिल्पी देवेंद्र सत्यार्थी ने शुरुआती दौर की लिखी मेरी 'यात्रा' कहानी सुनने के बाद जिस तरह मुग्ध और अभिभूत होकर आशीर्वाद दिया था और कहानियाँ लिखने की अपनी ही लीक पर चलते रहने का जो बल दिया था, उसे भूल पाना असंभव है ।

घर बैठे पंजीयन की सुविधा उपलब्ध है,पोर्टल संपदा 2.0 में

संतोष मिश्रा

मध्यप्रदेश में विकसित की गई ई-पंजीयन एवं ई-मुद्रांक इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली का नवीन संस्करण 2.0 विकसित किया गया है। इससे नागरिकों को और बेहतर सुविधाएं प्रदान करने में मदद मिली है। संपदा 2.0 से कोई भी व्यक्ति अब घर बैठे निर्धारित दस्तावेजों का पंजीयन कर सकता है। इसके लिये विभागीय पोर्टल https://sampada. mpigr.gàæv.in पर कोई भी व्यक्ति स्वयं पंजीकृत होकर अपने दस्तावेज का पंजीयन अथवा ई-स्टाम्प जारी कर सकता है। राज्य सरकार ने इसकी प्रक्रिया को बहुत सरलीकृत कर दिया है। अब दस्तावेजों के पंजीयन के लिये कार्यालय आने अथवा सेवा प्रदाता की सेवाएं लेने की आवश्यकता नहीं रही है। संपदा 2.0 पोर्टल में पंजीयन कार्य करने वाले पक्षकारों की आधार बेस्ड ई-केवायसी होगा। इसमें पेन कार्ड का सत्यापन आयकर विभाग के इंटीग्रेटेड सिस्टम पर आधारित होगा। संपत्ति की पहचान यूनिक आईडी से की जा सकेगी। संपत्ति की जियो मैपिंग के आधार पर ही गाइडलाइन दर निर्धारित होगी। इस आधार पर स्वत: ही संपत्ति का मूल्यांकन हो जायेगा। इस सॉफ्टवेयर में ऑटोमेटिक प्रारूप आधारित लेखन की व्यवस्था की गई है। शुल्कों के भुगतान के लिये संपदा वॉलेट मौजूद है। समस्त भुगतान सायबर ट्रेजरी या संपदा वॉलेट से सिंगल क्लिक द्वारा किया जा सकता है। पोर्टल में दस्तावेजों के निष्पादन की प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल हस्ताक्षर आधारित किया गया है। ई-हस्ताक्षर के साथ ऑटोमेटिकली पक्षकारों का फोटो अटैच होने संबंधित प्रबंध भी सॉफ्टवेयर में किया गया है। संपदा 2.0 में चयनित दस्तावेजों के लिये फेसलेस पंजीयन का विकल्प भी उपलब्ध है। इसमें पंजीयन कार्यालय आने की आवश्यकता नहीं है। दस्तावेजों के इलेक्ट्रॉनिकली प्रेजेन्टेशन एवं वर्चुअल फाइनल करने की सुविधा के साथ कार्यवाही के प्रमाणीकरण के लिये ओटीपी की सुविधा भी दी गई है। इसमें पंजीयन, रिटर्न, रिफ्यूजल की सुविधा भी इलेक्ट्रॉनिकली उपलब्ध है। यह पक्षकारों को वीडियो केवायसी से पंजीयन सुविधा भी देता है। इसमें दोनों मोड (असिस्?टेड एवं नॉन असिस्टेड) उपलब्ध है। पंजीकृत दस्तावेजों का केवल इलेक्ट्रॉनिक संस्करण ही संधारित किया जायेगा। संपदा 2.0 पोर्टल में पक्षकार स्वयं या सेवा प्रदाता के सहयोग से संपत्ति का पंजीयन कर सकता है। इसमें खरीदी या बेचे जाने वाली संपत्ति की पहचान संबंधित विभाग द्वारा प्रदत्त यूनिक आईडी तथा नक्शे पर चिन्हांकित संपत्ति से की जाती है। पक्षकारों की पहचान आधार बेस्ड ई-केवायसी से होती है। पोर्टल में चयनित दस्तावेज के आधार पर विलेख स्वत: तैयार होता है। विलेख के प्रारूप पर इलेक्ट्रॉनिकली सहमति के बाद शुल्क का ऑनलाइन भुगतान होता है। इसके बाद आधार बेस्ड ई-साईन या डिजिटल साइन के द्वारा ऑनलाइन ही दस्तावेजों का निष्पादन हो होता है। संपदा 2.0 पोर्टल में पंजीकरण के लिये 3 विकल्प (पारंपरिक रूप से कार्यालय में उपस्थित होकर, फेसलेस पंजीयन और रिमोट पंजीयन) उपलब्ध कराये गये है। पंजीयन के लिये सुविधा अनुसार कार्यालय में आने के लिये स्लॉट आरक्षित कर सकते है। फेसलेस और रिमोट पंजीयन में एआई आधारित वीडियो केवायसी से प्रत्येक पक्षकार की पहचान एवं लाइवलीनेस चेक किया जा सकता है। इसके द्वारा समस्त स्व-घोषणाओं की वीडियो रिकॉर्डिंग होती है। इसमें भी नॉन असिस्टेड विकल्प की स्थिति में ऑनलाइन प्रेजेन्टेशन होता है। पंजीयन के लिये स्लॉट बुकिंग के लिये असिस्टेड विकल्प की स्थिति में वर्चुअल इंटरेक्शन के लिये स्लॉट आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। लाभार्थियों ने साझा किये अपने अनुभव ?पंजीयन विभाग की संपदा 2.0 लागू होने के बाद विभिन्न जिलों के लाभार्थियों ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए इसे सुविधाजनक बताया है। गुना के विष्णु प्रसाद बशैंया ने अनुभव साझा किया कि पूरा काम ऑनलाइन और पहले से अधिक व्यवस्थित रूप से हुआ है। गुना की अंकिता ने बताया कि संपदा 2.0

शहीद गाथाओं का महीना,अंधेरों में जश्न नहीं

लक्ष्मीकांता चावला

क्या भारत सरकार का दूरदर्शन हर रोज एक शहीद की गाथा देशवासियों को नहीं सुना सकता? स्वतंत्र भारत का गौरव 16 दिसंबर जब भारतीय सेना के आगे पाकिस्तान के 93 हजार सैनिकों ने नाक रगडक़र आत्मसमर्पण किया। मनाओ, गाओ, पर देश के गीत पिछले अनेक वर्षों की तरह इस वर्ष भी दिसंबर का अर्थ अपने देश में, सरकारों में, समाज में और भारत से इंडिया बनते जा रहे समृद्ध वर्ग में केवल इतना ही है कि नववर्ष के स्वागत की तैयारियां करो। नववर्ष भी वह जो भारतीय संस्कृति के अनुसार सूर्य की पहली किरण के साथ नहीं, अपितु आधी रात के अंधेरों में मनाया जा रहा है। श्री जयशंकर प्रसाद के अनुसार अंधकार में दौड़ लग रही, मतवाला यह सब समाज है। अब दौड़ भी अंधकार में लगती है और एक बहुत बड़ा वर्ग शराब के नशे में मतवाला भी हो जाता है। मेरा प्रश्न देश से, सरकार से, समाज से यह है कि क्या दिसंबर का एक ही महत्व है कि पिछले वर्ष से नए वर्ष में जाने की तैयारी। यह वर्ष तो वैसे भी ब्रिटिश दासता का एक ऐसा नासूर है जिसे हम मिटाते नहीं, बल्कि पाल-पोस कर बढ़ा रहे हैं। सच्चाई यह है कि दिसंबर में हमारे पास मनाने को बहुत कुछ है। याद करने को भी बहुत कुछ है। वास्तविकता तो यह है कि दिसंबर मास में भारत के इतने बेटे-बेटियां शहीद हुए, अगर उनको ही याद करते रहें तो हर दिन अनेक शहीदों का बलिदान दिन या विशेष उल्लेखनीय कर्म का दिन है, पर याद कौन करेगा? दिसंबर के इसी सप्ताह में हम श्री गोबिंद सिंह जी के बलिदानी बच्चों को याद कर रहे हैं, प्रणाम कर रहे हैं। पूरी दुनिया में ऐसा कोई उदाहरण नहीं जहां सात और नौ वर्ष के बच्चे अपने देश और धर्म की रक्षा के लिए दीवारों में चिनवा दिए गए हों। जिन्होंने ललकार कर कह दिया हो कि वे कभी मुसलमान नहीं बनेंगे और सतश्री अकाल कहते हुए बलि पथ पर बढ़ गए। इन दिनों याद हम शहीद बलिदानी मोतीलाल मेहरा को भी करेंगे जो गुरु जी के बलिदानी परिवार को दूध पिलाने के कारण मुसलमानों की दृष्टि में अपराधी हुआ और सपरिवार कोल्हू में पीस दिया गया। ऐसे महापुरुषों को, बलिदानियों को याद करके ही हम स्वतंत्र रह सकते हैं। देश, धर्म और स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं। इसे हम दुर्भाग्य कहें या विडंबना कि आजादी के बाद उनको पूरी तरह भुला दिया जिन्होंने स्वतंत्रता हित में असंख्य यातनाएं सहते हुए आजादी दी। क्या देश यह याद न करता कि अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए मेघालय के एक गांव में पैदा हुआ नौजवान थोग्गन नेग मइया संगमा बड़ी वीरता से, नेतृत्व कुशलता से अपने आसपास के ग्रामीण युवकों को एकत्रित कर अंग्रेजों के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गया। वर्षों तक उसने अंग्रेजों को चने चबवाए। उसे काबू करने के लिए अंग्रेज सेना ने एक साथ तीन ओर से हमला किया। वर्तमान बंग्लादेश में स्थित जिला मैमन सिंह, दूसरा ग्वाल पाड़ा और तीसरा दावा बर्मा की ओर से बोला गया, पर यह वीर अजेय रहा। आखिर अंग्रेजों की चाल में फंसा। जब वार्ता के लिए अंग्रेजों ने इसे अपनी छावनी में बुलाया तो 12 दिसंबर 1872 को इसे गोलियों से भून दिया। संगमा की खासियत यह रही कि

इसकी शहादत के बाद भी गारो पहाडियों में पैदा हुए उसके वीर अंग्रेजों को नाकों चने चबवाते रहे, पर याद किसको है। निश्चित ही मेघालय में इसके नाम के दीपक घर-घर जलते होंगे, अन्यथा दिसंबर तो बस होटलों में पार्टियों की तैयारियों का ही महीना बन जाता है। 24 दिसंबर 1930 को भारत के अबाल वृद्ध, नर-नारी के सिर ऊंचा करके दुनिया से पूछने का दिन है कि क्या किसी और देश ने ऐसी वीर बेटियां पैदा कीं। बंगाल की शांति घोष और सुनीति चौधरी अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल थी। जन्म तो इनका 1916 व 1917 में ही हुआ है, पर 1930 तक इन्होंने इतिहास में अपने लिए स्वर्णिम अक्षर सुरक्षित कर लिए। त्रिपुरा जिले का मजिस्ट्रेट स्टीवंसन जो भारतीयों पर अत्याचार करने के लिए प्रसिद्ध था और सुरक्षा के चार घेरों के अंदर रहता था, वहां तक ये दोनों वीर बेटियां पहुंच गईं। स्टीवंसन को विश्वास दिला दिया कि वे वास्तव में ही नौका प्रतियोगिता के लिए आज्ञा लेने आई हैं और तभी दोनों ने पांच-पांच गोलियां मारकर उसका काम तमाम कर दिया। पूरे देश में ही नहीं, दुनिया में इन गोलियों की गूंज पहुंची। भारत की जनता ने इनमें दुर्गा, भवानी का अवतार महसूस किया। इसके बाद इन्हें कालापानी की जेल में भेजा गया। स्वतंत्र भारत की यह विडंबना है कि किसी इतिहासकार ने, सरकार ने, चिंतक ने यह जानने का प्रयास ही नहीं किया कि ये दो भारत पुत्रियां कालापानी की जेल से मुक्त होने के बाद जिंदा वापस आईं या वहीं शहीद हो गईं। अगर जिंदा आईं तो कहां गईं? पर भारत के लिए दिसंबर माह तो त्योहार होना चाहिए। क्या यह उन शहीदों से कम है जो फांसी के फंदे पर झूल गए और न ही ये रानी झांसी और उसकी मुंहबोली बहन मैना से कम है। काश! कथा कहानियों में इन्हें कोई स्थान मिल पाता तो ये हर बालक-बालिका का कंठहार हो जातीं। 23 दिसंबर 1912 भी तो देश के लिए गौरव का दिन है जब बंगाल से अंग्रेजों ने दिल्ली दरबार बनाने के लिए दिल्ली में प्रवेश किया तो दिल्ली के दिल चांदनी चौक में एक जबरदस्त बम धमाका हुआ। अफ्सोस सत्ता-मद में मस्त हाथी पर सवार लॉर्ड हार्डिंग घायल होकर बच गया, लेकिन महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस के नेतृत्व में भारत के वीर पुत्रों ने अपने संकल्प बल से विदेशी शासकों का यथायोग्य स्वागत किया। इस बमकांड के बाद गिरफ्तारियां तो होनी ही थीं, इसमें भाई बाल मुकुंद, श्री अवध बिहारी, अमीर चंद, बसंत कुमार आदि क्रांतिकारी पकड़े गए। अदालतों में न्याय

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, मंगलवार 17 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संकल्पशक्ति ऐसी महान शक्ति है जिसके द्वारा हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं : मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज

इंदौर (विश्व परिवार)। संकल्पशक्ति ऐसी महान शक्ति है जिसके द्वारा हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं उपरोक्त उद्गार मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज ने रेवतीरेंज में प्रतिभास्थली की बहनों तथा बेटिओं को सम्बोधित करते हुये व्यक्त किये।

मुनि श्री ने कहा कि यह आचार्य श्री की बहूत बड़ी कृपा है जो आप लोगों कि बेटियाँ दृण संकल्प दीदीयों की संगति में अपनी लौकिक शिक्षा के साथ संस्कार शिक्षा के साथ आगे बड़ रही है। मुनि श्री ने कहा कि संकल्प शक्ति ऐसी शक्ति है जो हमें प्रत्येक क्षेत्र में आगेबड़ाती है, उन्होंने बेटिओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि प्रतिभास्थली में जो संस्कार दीदीयों ने आप लोगों को दिये है वह संकल्प आपकी जिंदगी भर आपकी रक्षा कबच का कार्य करते है। उन्होंने कहा कि आजकल शिक्षा को इतना अधिक व्यवसाईक कर दिया है कि हाई परसेंटेज के कारण बच्चे बहूत टेंशन में रहते है मुनि श्री ने उदाहरणों के माध्यम से समझाया कि अच्छे नम्बर लाने बालों के संस्कार अच्छे हों यह जरुरी नहीं हां जिनके पास अच्छे संस्कार होंगे वह बच्चे आगे बड़े और आज वह उच्चपदों पर कार्यरत है।मुनि श्री ने कहा कि आप सभी बहूत प्रतिभाशाली हो, शिक्षा यदि संस्कार के साथ होगी तो आपके जीवन में बहूत काम आऐगी। शिक्षा का उद्देश्य नौकरी करना नहीं होंना चाहिये चारों और भौतिकता की चकाचौंध है और बेटी बेटियाँ

रिलेशनशिप में रहना प्रारंभ कर देती है ऐसे कुमार्ग और कु संस्कार से बचना चाहिये आपके सामने भी दो ही मार्ग सामने आऐंगे या तो सन्यास का मार्ग चुनो या गृहस्थी का मार्ग मुनि श्री ने कहा कि विवाह कराने का उद्देश्य अपने आपको संयम के साथ गृहस्थी बसाकर जीवन जीना कन्याओं के लिये 18 वर्ष की उम्र विवाह की सही उम्र है इससे आपकी संस्कृति और संतति दौनों सुरक्षित रहती है यदि आप लोग अपने उद्देश्य को लेकर आगे बड़ोगे तो आपका भविष्य सुरक्षित रहेगा इस अवसर पर मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज एवं श्री विनम्रसागर महाराज स संघ मंच पर विराजमान थे। -**अविनाश जैन**

सीता जी से सीखना चाहिए उन्होंने न जाने कितने ही कष्ट बिना झिझक होकर झेले और अंत में भी उन्होंने अग्नि परीक्षा दी वो भी बिना डरे : श्रुतसंवेगी श्रमण श्री आदित्यसागर जी महाराज

तूमैन/मप्र (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। श्री विशुद्धकुल गौरव, आध्यात्मिक महाद्युति, श्रुतसंवेगी श्रमण श्री 108 आदित्यसागर जी, श्रुतप्रिय श्रमण श्री 108 अप्रमितसागर जी महाराज, अशोकनगर गौरव सहजानंदी श्रमण श्री 108 सहजसागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री 105 श्रेयससागर जी महाराज तूमैन में विराजमान है। मुनीत्रय की चरण धूलि से पावन हो रही है, तूमैन की वसुधा। नित्यम आदित्यम आनंदम।

श्रुतसंवेगी श्रमण श्री आदित्यसागर महाराज जी ने कहा की, मानतुंग-सम निश्चित सुन्दर, मोक्ष-लक्ष्मी पाते हैं॥ तृतीय दिन महाअर्घ्य निर्वापमिति स्वाहा के साथ समापन हुआ श्री मद भक्तांबर महा मंडल विधान। हजारों प्रभु भक्त ने दी हवन में धूप की आहुति। मुनि श्री आदित्यसागर जी के सानिध्य में चल रहे तीन दिवसीय भक्तांबर विधान के बाद हवन हुआ और 15 दिसम्बर को समापन हुआ। सभी प्रभु भक्तो में आज अलग ही उत्साह देखने को मिला। सभी मुख्य पात्रों को स्थापित कलश एवं बैठा देव की तस्वीर देकर किया सम्मान। विधान के पश्चात मुनि श्री का हुआ तूमेन से विहार रात्रि विश्राम मुनि श्री का कचनार रहेगा और मुनि श्री की विहार दिशा सीहोर की ओर रहेगी।

मुनि आदित्य सागर जी ने कहा की भावों की विशुद्धि से लेकर कोई भाव नही होता। मुनि श्री ने आज के दिव्य वचनों में कहा इन तीन दिनों में आपने जितने कर्मों को जोड़ा है इतना आपने अभी तक नहीं जोड़ा होगा। हर दिन पांडाल की साइज बढ़ती गई और जगह पूरी भरती गई। प्रभु के समवशरण में जगह भक्ति देख खुद व खुद बढ़ती जाती है। बस आपको बिना किसी मोह के भक्ति करनी चाहिए।

तूमेन ग्राम वाशी की देन है इतना बड़ा कार्यक्रम। यहां के ग्राम वाशी राम को मानने के साथ - साथ राम की मानने वाले भी लोग है। जिस प्रकार राम ने कभी कोई बंटवारा नहीं किया, उसी प्रकार यहां के लोगो ने भी कोई बंटवारा नहीं किया और दिल खोल कर अपने घर के द्वार 3 दिन तक मुनि भक्तों के लिए खुले रखे, और निश्चय भावना से अपना योगदान दिया। अगर हम राम के व्यक्तित्व को आगे 1व भी उतार लिया तो आप सब का कल्याण हो जाएगा। जो राम के अंदर सहनशीलता थी वो आप में भी होनी चाहिए। हमको कष्ट को सहना सीखना है। तो सीता जी से सीखना चाहिए उन्होंने न जाने कितने ही कष्ट बिना झिझक होकर झेले और अंत में भी उन्होंने अग्नि परीक्षा दी वो भी बिना डरे।

वो घर स्वर्ग होते है- जिस घर में तीन भाई है और व्यापार सिर्फ एक है। तीन बहुएं एक साथ रहती हो। एक किचन में खाना पकाती हो। वो घर स्वर्ग होते है। हमको हमेशा अपना घर बड़ा करना चाहिए। हमारी अयोध्या बड़ी करना चाहिए। कभी भी राम और लक्ष्मण का बंटवारा नहीं करना चाहिए। राम का व्यक्तित्व हमेशा सहनशीलता वाला था इसलिए वे सारा कुछ अपने भाइयों के लिए छोड़ कर चले गए।

जब राम सेतु का निर्माण चल रहा था तब राम जी को लगा कि उनको भी कोई कार्य करना चाहिए। तो वे हनुमान जी के पास गए तो उन्होंने कहा हम भी कुछ कार्य करना चाहते है। तब उन्होंने एक पत्थर पर राम लिखा और समुद्र में फेंका। तब वह पत्थर समुद्र में डूब गया। तब राम जी ने पूछा कि आप फेक रहे तो पत्थर तेर रहा है और में फेक रहा तो डूब रहा है। तब हनुमान ने कहा कि आप जिसको छोड़ते है तो वो तिर जाता है और हम छोड़ रहे है तो वो तेर रहा है, समझदार व्यक्ति हमेशा विवेक से कार्य करता है। नैतिकता, व्यावहारिकता, स्नेह हमेशा उनमें रहती है। राम राम सुनते सुनते एक न एक दिन राम का कोई एक गुण भी आपके अंदर आजाएं तो समझ जाना आप राम बन जाएंगे।

आप लोगों को आपकी बुद्धि को सुधारना है। भावों की विशुद्धि से बड़ा कोई भाव नहीं होता है। हमको हमेशा अवसर वादी बनना है कभी कोई मौके की चीज नहीं छोड़ना है। जिस दिन तूमेन में बैठा देव का भव्य मंदिर बनेगा तब से देखना अशोकनगर का कोई भी चातुर्मास खाली नहीं जाएगा। बस आपको मंदिर का कार्य जल्द से जल्द करना है और बैठा देव को एक भव्य जिनालय में विराजमान करना है। तूमेन सी नगरी हो... आज मुनि श्री के समक्ष एक नवीन भजन भी लॉन्च हुआ। तूमेन सी नगरी हो, महिमा दिखलाई जो...। गुरु आशीष जो मिला, फिर क्या कठिनाई हो।। जिसे सभी ने बड़ी भक्ति भाव से सुना, इस भजन को अशोकनगर के अंश जैन कलाकार ने लिखा गया। और तूमेन और अशोकनगर में शूट किया है। -**अभिषेक अशोक पाटील**

महाकुंभ के लिए सारनाथ एक्सप्रेस फिर से बहाल

रायपुर (आरएनएस)। प्रयागराज में महाकुंभ को देखते हुए रेलवे प्रशासन ने दुर्ग-छपरा सारनाथ एक्सप्रेस को पुन: संचालित करने का निर्णय लिया है। यह ट्रेन मंगलवार 17 दिसंबर से फिर से नियमित रूप से दौड़ेगी। इस ट्रेन का संचालन करने की घोषणा रेलवे को प्रयागराज में लगने जा रहे कुंभ मेले को ध्यान में रखकर करना पड़ा। रेलवे ने पिछले दिनों उत्तर भारत में पड़ रही कड़ाके की ठंड और कोहरे का हवाला देते हुए दुर्ग-छपरा सारनाथ एक्सप्रेस को दो दिसंबर से 27 फरवरी तक अलग-अलग दिनों में रद कर दिया था। रेलवे के इस

फैसले का विभिन्न संगठनों के अलावा यात्रियों ने विरोध करते हुए इस ट्रेन की नियमित सेवा की मांग की थी। चौतरफा दवाब पड़ने पर रेलवे प्रशासन को यह फैसला वापस लेना पड़ा। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक प्रयागराज में कुंभ मेला लगने जा रहा है। ऐसे में रेलवे बोर्ड ने सभी रेलवे की 77 ट्रेनों के साथ छत्तीसगढ़ से प्रयागराज जाने वाली सारनाथ को भी कोहरे के कारण 76 दिन तक(तीन माह के लिए) अलग-अलग दिनों में रद किया था। अब फिर से सारनाथ के चलने से यात्रियों को राहत मिलेगी। संगठनों और नेताओं ने रेलवे के इस फैसले पर आभार व्यक्त किया है। साथ ही भविष्य में भी सारनाथ एक्सप्रेस को कोहरे के कारण रद न करने की मांग की है।

विजय मिश्रा सहित अन्य साहित्यकारों को चतुर्भुज मेमोरियल कृति सम्मान

समाज की मजबूती है संस्कृति, रोकें विकृति : डॉ. अलंग

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन के संस्कृति विभाग के सहयोग से बहुमत संस्था तथा श्री चतुर्भुज मेमोरियल फाउंडेशन के द्वारा साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन भिलाई निवास में किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध लेखक डॉ संजय अलंग (आई ए एस) ने मानव समाज में सभ्यता -संस्कृति की उपादेयता को रेखांकित किया। विशिष्ट अतिथि पद्मश्री अजय मंडावी, ई व्ही मुरली ने भी लोकजीवन पर विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में लोकनाट्य, चित्रकला जनजातीय जीवन, तालाब और जनजीवन पर क्रमश: विजय मिश्रा %अमित, डॉ सुनीता वर्मा, डुमन लाल ध्रुव और गोविंद पटेल ने रोचक जानकारियों से संगोष्ठी को सार्थक किया।

इसी क्रम में आयोजित सम्मान समारोह के अंतर्गत सर्वश्री लोक बाबू, दुर्गा प्रसाद पारकर, देवेंद्र गोस्वामी, राजेंद्र सोनबोईर, मयंक चतुर्वेदी, मो.जाकिर हुसैन, श्वेता उपाध्याय, रौनक जमाल, कमलेश चंद्राकर, डॉ संजय दानी, डुमन लाल ध्रुव एवं विजय मिश्रा अमित को साहित्य धर्मिता के कुशल निर्वहन हेतु चतुर्भुज मेमोरियल कृति सम्मान से विभूषित किया गया।

इस अवसर बहुमत के संस्थापक विनोद मिश्र ने स्वागत उद्बोधन के साथ ही बहुमत और चतुर्भुज मेमोरियल फाउंडेशन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अन्य महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन डॉ अरुण श्रीवास्तव, राजीव चौबे, मुमताज, नरेंद्र बंछोर, सीमा श्रीवास्तव, श्वेता उपाध्याय सुमन कन्नौजे, जसवीर कौर ने सफलता पूर्वक किया। समारोह में दुर्ग, भिलाई, रायपुर के साहित्यकार बड़ी संख्या में शामिल हुए।

एसपी-कलेक्टर ने शहीदों परिवारों को आदार भाव से हाथ जोड़ा

सांस्कृतिक, प्राकृतिक, पुरातत्विक धरोहरों के आकलन का किया गया अध्ययन

जशपुर (विश्व परिवार)। भारत स्काउट गाइड छत्तीसगढ़ द्वारा संचालित राज्य स्तरीय हाईक अमृतसर मनाली में राज्य के 104 सक्रिय स्काउट एवं गाइडर के द्वारा राज्य मुख्य आयुक्त डॉ.सोमनाथ यादव, राज्य सचिव कैलाश सोनी, राज्य प्रशिक्षण आयुक्त विजय यादव, हाईक प्रभारी शांतनु कुरे के मार्गदर्शन में देश की विभिन्न संस्कृतिक, प्राकृतिक एवं पुरातत्विक धरोहरों का आकलन एवं अध्ययन हेतु राज्य मुख्यालय के द्वारा चयनित जशपुर जिले से उत्तम कुमार यादव स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिन्दी विद्यालय नारायणपुर विकासखंड सचिव (स्काउट) कुनकुरी कों जिला शिक्षा अधिकारी जशपुर प्रमोद कुमार भटनागर एवं जिला सचिव टुमनु गोसाई प्राचार्य जिला सचिव टुमनु गोसाई प्राचार्य अगुस्टिना तिग्गा के मार्गदर्शन में सम्मलित किया गया.

स्काउट के द्वारा अमृतसर स्वर्ण मंदिर, जलियांवाला बाग, अटारी बाघा बॉर्डर, मनाली में प्राचीनतम ऐतिहासिक मंदिर मां हिडिंबा, घटोत्कच, देवदार के सघन वृक्ष का एवं परम्परारिक पारंपारिक वेशभूषा का ज्ञान, व्यास नदी के किनारे स्थित वशिष्ठ मंदिर और प्राकृतिक गर्म जलधारा जहां हड्डियों को कपकपा देने वाली ठंड-10 डिग्री सेल्सियस के बावजूद गरम कुंड 9.02 किलोमीटर लंबी पहाड़ के बीच में बनी हुई सुरंग अटल टर्नल एवं दुर्गम पहाड़ी एवं दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में लोगों का संघर्षपूर्ण जीवन यापन देखकर के जीवन के प्रति उतकंठ लालसा एवं कठिनाइयों में जीने की की प्रेरणा प्राप्त हुआ। दुर्गम पहाड़ियों के बीच से व्यक्ति एवं वस्तुओं के आदान प्रदान हेतु जीब लाईन की कारगर व्यवस्था पैराग्लाइडिंग एवं रिवर राफ्टिंग, चंडीगढ़ में सुखना लेक एवं नेकचंद द्वारा स्थापित रॉक गार्डन अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगिता में बदलने की कलाओं की समझ तैयार हुआ.योग्य स्काउटर से श्रेष्ठ स्काउट तैयार करने की यह परम्परा निश्चित रूप से विद्यार्थियों को सर्वांगीण विकास करने में सहायक होगा. 7 दिसंबर से 15 दिसंबर तक आयोजित इस हाईक कार्यक्रम के सफलतापूर्वक संपादन के लिए जिला संघ जशपुर द्वारा शुभकामनायें प्रेषित किया.

रक्षित केंद्र जशपुर में शहीद परिवारों के सम्मान में किया कार्यक्रम आयोजित

एसपी, कलेक्टर ने शहीद परिवारों को हाथ जोड़कर शाल, श्रीफल प्रदान कर किया सम्मानित

जशपुर पुलिस आपके सहयोग के लिए सदैव तत्पर है : एसपी शशि मोहन सिंह

छत्तीसगढ़ शासन, जिला एवं पुलिस प्रशासन सदैव आपके साथ रहेगा : कलेक्टर रोहित व्यास

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। सोमवार को मुख्य सचिव, (छ.ग. शासन) के निर्देशानुसार सरकार गठन के एक साल पूर्ण होने पर रक्षित केंद्र जशपुर स्थित शहीद स्मारक वाटिका में जिले के शहीद परिवारों के सम्मान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जशपुर जिले में निवासरत शहीदों के परिवार उपस्थित रहे। इस अवसर पर कलेक्टर जशपुर रोहित व्यास व एस .पी जशपुर शशि मोहन सिंह ने हाथ जोड़कर शाल, श्रीफल व मिष्ठान प्रदान कर शहीद परिवारों को सम्मानित किया।

पुलिस अधीक्षक शशि मोहन सिंह ने शहीद परिवारों को संबोधित व धन्यवाद करते हुए कहा कि आपका बलिदान इस मिट्टी की आजादी में शामिल है, हम सुख दुख में सदैव आपके साथ हैं। किसी भी प्रकार की जरूरत होने पर जशपुर पुलिस आपके सहयोग के लिए तत्पर है।

शहीद परिवारों की सुनीं समस्याएं- इस दौरान कलेक्टर व एसपी कों शहीद परिवारों ने अपनत्व के भाव से समस्याएं बताई। वहीं उन्होंने उनकी समस्याओं कों ध्यान से सुनकर कहा निराकरण के लिए प्रयास जारी है। कलेक्टर जशपुर रोहित व्यास ने शहीद परिवारों को दिए अपने संबोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ शासन, जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन सदैव आपके साथ रहेगा। हम आपके परिवार के ही सदस्य हैं। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर नि: संकोच हमे बता सकते हैं। हम आपकी समस्याओं के निराकरण के लिए पूरा सहयोग करेंगे।

उक्त कार्यक्रम में उप पुलिस अधीक्षक मंजुलता बाज, रक्षित निरीक्षक अमरजीत खुटे, शहीद परिवार सहित पुलिस के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

एयरप्लेन नजदीक से देखने एयरपोर्ट में घुसा युवक, मचा हड़कंप

रायपुर (आरएनएस)। माना एयरपोर्ट की सुरक्षा में भारी चूक हो गई। एक शराबी दीवार फांदकर एयरपोर्ट परिसर में घुसा और नए एटीसी टावर की ओर से रन-वे पर आ गया। वह एरोप्लेन को नजदीक से देखना चाहता था। इसके लिए वह महासमुंद से रायपुर आया था। युवक को दौड़ता देखकर एयरपोर्ट में हड़कंप मच गया। सीआईएसएफ के जवान युवक की ओर दौड़े और उसे दबोच लिया। पकड़कर बाहर लाया गया। उससे पूछताछ की गई। वह ठीक से जवाब नहीं दे पा रहा था। उसके बाद उसे पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने युवक के खिलाफसेंधमारी का केस दर्ज किया है। उसे कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया। माना टीआई भावेश गौतम ने बताया क सरायपाली निवासी पारसमणि ध्रुव (24) मजदूरी करता है। वह 13 दिसंबर की सुबह बस से रायपुर आया। फिर माना एयरपोर्ट पहुंचा। वह बरौंदा और रमचंडी गांव के आसपास भटकता रहा और मौका देखकर एयरपोर्ट की दीवार फांदकर भीतर आ गया। वह नए एटीसी टावर की ओर से दौड़ते हुए रनवे पर आ गया। वह आने वाली फ्लाइट को देखने लगा। रन-वे पर युवक को दौड़ता देखकर हड़कंप मच गया। वायरलैस से लगातार पॉइंट आने लगा। उसके बाद युवक को दबोच लिया गया। युवक ने पूछताछ में बताया कि वह एरोप्लेन को नजदीक से देखना चाहता था। उसे पता नहीं था कि वहां जाना मना है।

छत्तीसगढ़ कांग्रेस विधायक दल की बैठक सम्पन्न

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ विधानसभा नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत की अध्यक्षता में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज, छग सह प्रभारी जरीता लेफ्तलांग, श्री विजय जांगीड, पूर्व उप मुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव, पूर्व मंत्री रविन्द्र चौबे, श्री ताम्रध्वज साहू, डॉ. शिवकुमार डहरिया, धनेन्द्र साहू, श्री मोहम्मद अकबर, श्री जयसिंह अग्रवाल, मोहन मरकाम, प्रेमसाय सिंह टेकाम, अमरजीत भगत, गुरू रूद्र कुमार, श्रीमति अनिला भेड़िया, पूर्व विधायक श्री अमितेश शुक्ल , श्री अरूण वोरा, गुरूमुख सिंह होरा, श्री नोबेल वर्मा, श्री कुलदीप जुनेजा, प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग अध्यक्ष श्री सुशील आनंद शुक्ला, कांग्रेस विधायक दल सचिव अमित पाण्डेय, प्रदेश कांग्रेस वरिष्ठ प्रवक्ता श्री घनश्याम राजू तिवारी, कांग्रेस विधायकगण भोलाराम साहू, श्री इंद्रशाह मंडावी, सावित्री मंडावी, श्री विक्रम मंडावी, यशोदा निलाम्बर वर्मा, कुंवर सिंह निषाद , संगीता सिन्हा, अंबिका मरकाम, द्वारिकाधीश यादव, दिलीप लहरिया, उत्तरी गणपत जांगड़े आदि की उपस्थिति में संपन्न हुई।

सत्यनारायण मंदिर के सभा भवन में महिला उत्पीड़न, घरेलू हिंसा व साइबर क्राइम से बचने दी गई सलाह

कंसारी समाज में महिला सुरक्षा संबंधी दी गई कानूनी जानकारी, गोबरा नवापारा पुलिस थाने के महिला व पुरुष पुलिस कर्मचारी रहे मोजूद

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। कंसारी महिला संगठन कसेर समाज नवापारा के द्वारा महिला सुरक्षा कानून जानकारी एवम प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे आमंत्रित अतिथि के रूप में गुलाब सिन्हा सहायक उपनिरीक्षक, विजय साहू आरक्षक, निम्मी साहू, महिला आरक्षक, अंजली बारले प्रधान महिला आरक्षक, सुनील कश्यप, कंसारी समाज के विभिन्न संगठन के प्रतिनिधि के रूप में सहदेव कंसारी, कलिदान कंसारी, बाबूलाल साव, राजकुमार, तरुण, बलराम सारस, अशोक भारद्वाज, गोविंदा, गोपाल संतोष कंसारी, तुकाराम कंसारी के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर महिला सुरक्षा संबंधी जानकारी देते हुए पुलिस कर्मियों की टीम ने संयुक्त रूप से महिलाओं को घरेलू हिसा, प्रताड़ना, दहेज, बाल विवाह, बाल अपराध, यौन उत्पीडन, बेटियों की सुरक्षा और सुनसान स्थान पर अपनी सुरक्षा से संबंधी कानूनी जानकारी दी।और कहा की आज के आज के समय में अपनी सुरक्षा के लिए जागरुक और सतर्क रहना बहुत ज़रुरी हैं इसके लिए अपने बचाव हेतु विभिन्न कानून बने है महिलाओं को कानूनी जानकारी रखना बेहद ज़रुरी है।साइबर क्राइम यह एक ऑनलाइन अपराध हैं।जो इंटरनेट या डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके किया जाता है। इसमें ऑनलाइन धोखाधड़ी, चोरी, जासूसी, वायरस और अन्य अपराध शामिल हो सकते हैं।

यह आमतौर पर कंप्यूटर सिस्टम, नेटवर्क और इंटरनेट संबंधी सुरक्षा में समस्या उत्पन्न करता है, जो उपयोगकर्ताओं को प्रभावित कर सकते हैं और उनकी गोपनीय जानकारी को चोरी कर सकते हैं।अगर घटना घटती हैं तो तुरंत टॉल फ्री नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज कराएं। घटना की प्राथमिकी अविलंब साइबर थाना में दर्ज कराएं। घरेलू हिंसा केवल एक थप्पड़, लेकिन नहीं मार सकता यह वाक्य किसी फिल्म का मात्र एक डायलॉग ही नहीं बल्कि विभिन्न समाजों की बदरंग हकीकत को भी उजागर करता है। घरेलू हिंसा दुनिया के लगभग हर समाज में मौजूद है। पीड़ित के खिलाफ हमलावर द्वारा अपनाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में शारीरिक शोषण, भावनात्मक शोषण, मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार या वंचितता, आर्थिक शोषण, गाली-गलौज, ताना मारना आदि शामिल हैं।

सभ्य समाज में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। लेकिन प्रत्येक वर्ष घरेलू हिंसा के जितने मामले सामने आते हैं, वे एक चिंतनीय स्थिति को रेखांकित करते हैं। हमारे देश में घरों के बंद दरवाज़ों के पीछे लोगों को प्रताड़ित किया जा रहा है।

घरेलू हिंसा अधिनियम के अंतर्गत प्रताड़ित महिला अपराधी के विरुद्ध प्रकरण दर्ज करा सकती है। दुर्व्यवहार कभी भी पीड़ित की गलती नहीं होती। एक समाज के रूप में, हम पीड़ितों पर दोष मढ़ते रहते हैं, यह पूछकर कि, उसने ऐसा क्या किया कि उसे यह सब झेलना पड़ा या, उसने क्या पहना हुआ था या, वह वहाँ क्यों थी या, वह अपने घुटनों को एक साथ क्यों नहीं रख सकी? फिर भी, हम अन्य अपराधों के पीड़ितों से ये सवाल नहीं पूछते। हमें घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न से बचे लोगों से ये सवाल पूछना बंद कर देना चाहिए। बल्कि यह पूछे की दुर्व्यवहार करने वाला दुर्व्यवहार क्यों करना चुनता है? हर महिला को अपने मोबाईल में सुरक्षा के लिए अभिव्यक्ति ऐप डाउनलोड करना चाहिए। इस ऐप को प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है. बलात्कार, छेड़छाड़, घरेलू हिंसा, मारपीट, टोनही प्रताड़ना, दहेज प्रताड़ना, अपहरण, बाल विवाह, मानव तस्करी, एसिड अटैक, लैंगिक अपराध, साइबर अपराध शामिल किए गए हैं.

समाज की प्रतिभाओं का हुआ सम्मान : कार्यक्रम के दूसरे सत्र में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन संपन्न हुआ। श्री सत्यनारायण शिक्षा विकास समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम जिसमें कंसारी समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों दसवीं में प्रथम दुदिशा, शुभम, रेणुका कंसारी।बारहवीं में प्रथम शिवम, आकाश, प्रथम, कंसारी को शिक्षा समिति के नागेंद्र गोपाल डिकेश मितेश अनिल माला कंसारी ने मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। पुलिस कर्मियों को महिला संगठना समिति एवम शिक्षा विकास समिति के द्वारा प्रतिक चिन्ह, श्रीफल, साल भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन कंसारी समाज महिला संगठन की अध्यक्ष सरोज कंसारी ने किया। आभार उपाध्यक्ष समाज संगठन उपाध्यक्ष कलिदान कंसारी ने किया।

इस अवसर पर महिला पदाधिकारी धर्मिन, पुष्पा, विमला, हर्षा, कल्याणी विलासिनी, सुनीता, संतोष, लीला, हीरा, अनीता, पद्मिनी पद्मा, नर्मदा, रेखा, पीना, गायत्री, उषा, अंजू, प्रेमीन, संतोषी, रामबाई, द्रोपदी, सीमा, सावित्री राजकुमारी, रूखमणी, तीजिया कैकई, ननकी, प्रीति, रति, रेणु, गंगा, पूर्णिमा, रूखमणी, संतोषी, सावित्री, पार्वती आदि मातृ शक्तियों ने पूर्ण सहयोग दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला संगठन, युवा, संगठन, शिक्षा विकास, समाज संगठन, मंदिर कमेटी, का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

शीतलहर से कांप रहा समूचा छत्तीसगढ़

रायपुर (आरएनएस)। दक्षिण छत्तीसगढ़ में एक-दो स्थानों पर हल्की बारिश होने की संभावना है।रविवार को सर्वाधिक अधिकतम तापमान 29.8 डिग्री सुकमा में तथा सबसे कम न्यूनतम तापमान 02.4 डिग्री बलरामपुर में दर्ज किया गया। आगामी 24 घंटों में दक्षिण-पूर्व बंगाल की खाड़ी में निम्न दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है। तत्पश्चात अगले दो दिनों में इसके और अधिक स्पष्ट होने व पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा में तमिलनाडु तट की ओर बढ़ने की संभावना है। जिससे आगामी तीन दिनों में मौसम बदलने के आसार हैं। प्रदेश में बीते 24 घंटे में न्यूनतम तापमान एक से दो डिग्री तक गिर गया है।

बीते दो वर्ष से भी कम पारा गिर गया है। रविवार को 12.1 डिग्री दर्ज किया गया है। इससे पहले 15 दिसंबर न्यूनतम तापमान में 12.8 डिग्री व दो दिसंबर को न्यूनतम तापमान में 12.2 डिग्री दर्ज किया गया था।

इसके अलावा सरगुजा में भी पांच साल का रिकॉर्ड टूट गया है। यहां 2019 में 3.8 डिग्री पारा दर्ज किया गया था। रविवार को पारा 3.7 डिग्री दर्ज किया गया है। प्रदेश के उत्तरी भाग में कुछ पैकेट में शीतलहर चल रही है। साथ ही साथ उत्तर छत्तीसगढ़ के कुछ पैकेट में शीतलहर जैसी स्थिति बनी हुई है। सरगुजा संभाग के अनेक जिलों में पाले की स्थिति बनी हुई है।

अगले तीन दिनों में उत्तरी छत्तीसगढ़ के जिलों के न्यूनतम तापमान में तीन से चार डिग्री तथा दक्षिण छत्तीसगढ़ के जिलों के न्यूनतम तापमान में चार से छह डिग्री की क्रमिक वृद्धि हो सकती है। 17 दिसंबर से प्रदेश में बादल छाए रहने तथा 18 दिसंबर से संभावना है।रविवार को सर्वाधिक अधिकतम तापमान 29.8 डिग्री सुकमा में तथा सबसे कम न्यूनतम तापमान 02.4 डिग्री बलरामपुर में दर्ज किया गया। आगामी 24 घंटों में दक्षिण-पूर्व बंगाल की खाड़ी में निम्न दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है। तत्पश्चात अगले दो दिनों में इसके और अधिक स्पष्ट होने व पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा में तमिलनाडु तट की ओर बढ़ने की संभावना है। जिससे आगामी तीन दिनों में मौसम बदलने के आसार हैं। प्रदेश में बीते 24 घंटे में न्यूनतम तापमान एक से दो डिग्री तक गिर गया है।

अंबिकापुर में अधिकतम 23.6 डिग्री और न्यूनत तापमान 3.7 डिग्री, बीजापुर में अधिकतम पारा 29.2 और न्यूनतम 10.8 डिग्री, बिलासपुर में अधिकतम तापमान 27.8 डिग्री और न्यूनतम पारा 11.0 डिग्री दर्ज किया गया। दंतेवाड़ा में 28.9 डिग्री, न्यूनतम पारा 9.2 डिग्री, डुमरबहार में अधिकतम 26.9 डिग्री और न्यूनतम 6.3 डिग्री रहा।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर मंगलवार 17 दिसंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने धान खरीदी केन्द्रों का किया औचक निरीक्षण

बलरामपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर राजेन्द्र कटारा ने विकासखण्ड बलरामपुर के धान उपार्जन केंद्र कपिलदेवपुर एवं वाड्रफनगर के उपार्जन केन्द्र डोंगरो का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने धान खरीदी केन्द्रों पर चल रही खरीदी प्रक्रिया का निरीक्षण किया और किसानों से बातचीत कर उनकी समस्याओं एवं उपार्जन प्रक्रिया की जानकारी ली। कलेक्टर ने किसानों से फसल की गुणवत्ता, तौल प्रक्रिया और समय पर भुगतान को लेकर चर्चा की। उन्होंने समिति प्रभारियों से कहा कि शासन की प्राथमिकता है कि किसानों को उपार्जन केन्द्रों पर किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े, इस बात का विशेष ध्यान रखें। कलेक्टर ने धान खरीदी प्रक्रिया को पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण तरीके से करने के निर्देश दिये। साथ ही उन्होंने कहा कि किसानों के धान की नमी का सही मूल्यांकन हो, तौल में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो। उन्होंने यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि किसानों को केन्द्रों पर त्वरित सहायता एवं सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। कलेक्टर ने उपार्जन केंद्रों की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और वहां मौजूद कर्मचारियों से विस्तार से जानकारी ली। इस दौरान अनुविभागीय अधिकारी राजस्व वाड्रफनगर चेतन साहू सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

अवैध खनिज परिवहन करते 9 वाहन जब्त

बिलासपुर(विश्व परिवार)। लीज क्षेत्र से बाहर ऋशर संचालित होने के कारण ऋशर मशीन को सील कर दिया गया है। मामला कोटा तहसील के ग्राम बाकी घाट का है। ऋशर मालिक राजकुमार गोयल को शो कॉज नोटिस जारी किया गया है। खनिज और राजस्व तथा पुलिस ने अवैध खनिज परिवहन करते हुए 9 वाहनों को जब्त किया है। खनिज विभाग के अधिकारियों ने बताया कि प्राप्त शिकायत के आधार पर 10 दिसंबर को सहायक कलेक्टर एवं प्रभारी तहसीलदार कोटा तन्मय खन्ना (प्रशिक्षु आईएएस) एवं उनकी टीम द्वारा ग्राम बांकीघाट तहसील कोटा जिला बिलासपुर के अन्तर्गत राजकुमार गोयल के पक्ष में स्वीकृत खनिज साधारण पत्थर के उत्खनिपट्टा क्षेत्र का मौका जांच किया गया। जिसमें पट्टेदार द्वारा लीज क्षेत्र के बाहर अवैध उत्खनन किया जाना तथा लीज क्षेत्र के बाहर ऋशर स्थापित एवं संचालित होना पाया गया। उक्त जांच प्रतिवेदन के आधार पर खनिज अमला बिलासपुर द्वारा 13 दिसंबर को संबंधित ऋशर को सील कर दिया गया है तथा पट्टेदार के विरूध्द कारण बताओ नोटिस जारी किया जाकर नियमानुसार आगे कार्रवाई की जावेगी। खनिज विभाग की टीम ने 13 दिसंबर को कोनी, सेन्दरी, लोफंदी, कछार, लमेर, घुटकू, निरतु, धुरीपारा, मंगला, कोटा एवं सकरी क्षेत्र में जांच के दौरान खनिज रेत के 2 हाईवा एवं 4 ट्रेक्टर, खनिज गिट्टी 2 हाईवा एवं खनिज ईंट मिट्टी के 1 माजदा वाहन को खनिजों के अवैध परिवहन करते पाये जाने पर जब्त कर पुलिस थाना कोटा एवं पुलिस थाना सकरी में सुरक्षार्थ रखा गया है। इन सभी वाहनों के चालकों और मालिकों के विरूध्द छ.ग. गौण खनिज नियम 2015 के नियम 71/ खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम 1957 के धारा 21 की तहत् खनिजों के अवैध परिवहन का प्रकरण दर्ज किया गया है। कलेक्टर के निर्देशानुसार राजस्व विभाग, पुलिस विभाग एवं खनिज उड़नदस्ता दल बिलासपुर द्वारा खनिजों के अवैध उत्खनन / परिवहन/भण्डारण के विरुद्ध आगे भी कार्रवाई जारी रहेगी।

गजराजों की चिंघाड़ से सूईआरा जंगल गूंजा ग्रामीणों में दहशत

कोरबा(विश्व परिवार)। करतला रेंज में विगत एक पखवाड़े से सक्रिय 50 हाथियों का दल अब सूईआरा जंगल पहुंच गये है। इस दल में चोटिल हाथी भी शामिल हो गया है। बीती रात अचानक पहुंचे दल ने सूईआरा गांव में ग्रामीणों के खलिहान में प्रवेशकर वहां रखे धान की खरही को खाने के साथ ही इतर-बीतर कर दिया । इतना ही नहीं खेतों व बाड़ी में पहुंचकर वहां लगे धान की फसल व सब्जी के पौधों को भी तहस-नहस कर दिया है। हाथियों का उत्पात रात भर चला। इस दौरान गांव हाथियों की चिंघाड़ से गुजंता रहा और ग्रामीण मारे डर के अपने-अपने घरों में दुबके रहे। बड़ी संख्या में हाथियों के आने तथा उत्पात मचाये जाने की सूचना मिलने पर वन विभाग का अमला आज सुबह सूईआरा गांव पहुंचा और रात में हाथियों द्वारा किये गये नुकसानी का आकंलन करने के साथ ही रिपोर्ट तैयार की। एक अनुमान के मुताबिक हाथियों के उत्पात में ग्रामीणों को हजारों रूपये की चपत लगी है। इस बीच कोटमेर जंगल में घुम रहे पैरों से चोटिल हाथी भी सूईआरा पहुंच हाथियों के दल में शामिल हो गया है, जहां बीती रात हाथियों के दल ने करतला रेंज के सूईआरा में जमकर उत्पात मचाया वहीं कुदमुरा रेंज में भी 29 हाथी सक्रिय है।

दो लोगो को घायल करने वाला तेंदुआ पकड़ा गया, तेंदुए की जान भगवान भरोसे

गरियाबंद (विश्व परिवार)। जंगलो में मनुष्यों के कब्जे का द्वंद आज देखने को मिला। जंहा वन विभाग के लापरवाही के साथ लाचारी भी देखने को मिली. मामला है जिला मुख्यालय से बारह किलोमीटर दूर स्थित नेशनल हाइवे से लगे ग्राम बारूका का जंहा सोमवार को सुबह के 10 बजे एक युवक तेंदुये ने हमला कर घायल कर दिया। उसके तीन घंटे के अंदर घर के आँगन में खेल रही बच्ची उम्र 4 वर्ष पर हमला कर दाँत व नाखुनो से नोच दिया, दोनों ही घायलों को अस्पताल रिफर किया गया जंहा उनकी हालत खतरे से बाहर है।

इन उहा पोह के बीच तेंदुया जंगल की और भागने के बाद वापस बच्चे के घर की और लौटा, जंहा वह कोठा नुमा जगह पर था ग्रामीणों ने अपने जान को जोखिम में डालते डालते हुए नेट के सहारे पकड़ने में कामयाब रहे जिसकी सुचना वन विभाग को दी गई। आधा घंटे बाद वन मंडला अधिकारी लक्ष्मण सिंह एसडीओ मनोज चंद्रकार और रेंजर भी मौके पर पहुचे है, पुलिस और वन अमले की टीम ने आस पास के क्षेत्र में घेराबन्दी की किन्तु साथ में पिंजरा लाने से चूक गए.

हाथ हिलाते पहुँचे पशु चिकित्स- वन विभाग नगर में पशु विभाग से तेंदुए को बेहोश करने की दवा के साथ पहुंचने का अनुरोध ही करता रह गया। लगभग आधा घंटे देर बाद दिनेश्वरी मर्केण्ड व वेदप्रकाश सोनवानी पशु चिकित्सक हाथ हिलाते तेंदुए को देखने पहुँचे खाली हाथ. यह सारी घटना में तीन से चार घंटे तक तेंदुए को लोगो ने डंडे से दबा कर रखा था.पशु चिकित्सको ने न तो किसी को सलाह दी की दवा के रखे

लोगो को अपनी पकड़ ढीली करनी चाहिए थी. वन विभाग के लोगो को अपने कब्जे में तेंदुए को लेना था।

पल पल तेंदुए के जान पर भारी- दहशत भरे लोगो के द्वारा डंडे से दबाये हुए तेंदुए में दो घंटे तक हलचल करते देखा गया फिर धीरे धीरे शायद उसके स्वास्थ्य ने भी जवाब दे दिया, जब तक तेंदुए को पिंजरे में डाला गया लगा की तेंदुए की सांसे भी उखड़ गई होंगी.बरुका से निकलते तक तेंदुआ लगभग अचेतन अवस्था में था जंहा पशु चिकित्सक भी न जाँच कर सके न समझ सके।

गांव में दहशत का माहौल-दो बड़ी घटना के बाद गांव में दहशत का माहौल बन गया था तीसरी घटना को अंजाम देने के पहले ही भय के साये में ग्रामीणों की मदद से वो दो लोगो के ऊपर हमला करने के बाद तेंदुआ बच्ची के घर के पास ही विचरण कर रहा था। वाली वाल के नेट के ज़रिए तेंदुए को फंदे में फसाया गया जैसे ही तेंदुआ नेट के फंदे में फसा अन्य ग्रामीणों ने उसे पकड़ लिया जिसके बाद वन अमले को सूचना दी गई वही वन मंडल अधिकारी लक्ष्मण सिंह एसडीओ मनोज चंद्रकार और रेंजर भी मौके पर पहुचे है, पुलिस और वन अमले की टीम ने आस पास के क्षेत्र में घेराबंदी की जिसके बाद तेंदुआ को पड़कने बड़ी जाली मंगवाई गई करीब आधे घंटे के मशक्कत के बाद वन अमले ने नेट की जाल में पकड़ाये तेंदुए को लोहे की मजबूत जाली में शिफ्ट करने की तैयार हुआ इधर घटना के बाद जहाँ सुबह ग्राम बारुका में दहसत का मौहाल था वही जैसे तेंदुआ पकड़ा में आया अब ग्रामीण दहशत से बाहर है. किन्तु तेंदुए की जान पर बन आयी है

ट्रैक्टर चोरी करने वाले आरोपी को गरियाबंद पुलिस ने उड़ीसा से किया गिरफ्तार

गरियाबंद(विश्व परिवार)। थाना गरियाबंद मामला 8 से 11 दिसंबर के दरम्यानी रात ग्राम सड़कपरसुली मे हुए ट्रैक्टर चोरी के सूचना पर गरियाबंद के वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा चोरी के आरोपी को शीघ्र गिरफ्तार करने के संबंध में दिशा निर्देश दिए।जिसके परिपालन मे थाना प्रभारी गरियाबंद निरीक्षक ओम प्रकाश यादव व टीम तथा साइबर सेल के द्वारा ट्रैक्टर को चोरी करने वाले आरोपी को उड़ीसा से गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया। घटना के विषय में मिली के अनुसार 13 दिसंबर को प्रार्थी राधेश्याम राठौर पिता गिरधारी सिंग राठौर उम्र 38 साल निवासी सिरसिला पोस्ट धांदोली व्हाया बेसरोली तहसील मकराना थाना गच्छीपुरा जिला डिडवाना (कुचामन) राजस्थान हाल अमात गोड़ सामाज ग्राम सडकपरसुली थाना व जिला गरियाबंद द्वारा थाना आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि 8 से 11 दिसम्बर तक अमात गोड सामाज भवन सडक परसुली से अज्ञात चोर द्वारा प्रार्थी का जॉन डीयर ट्रेक्टर क्रमांक आरजे 14-आरडी-1848 मॉडल 2017 ग्रीन कलर की हाईड्रोलिक मशीन लगा हुआ को चोरी कर ले गया है।इस रिपोर्ट पर अपराध पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया है।विवेचना दौरान जांच मे कंपनी के कार्यरत प्रदीप कुमार गर्ग के ऊपर संदेह व्यक्त करने पर उक्त व्यक्ति के मोबाइल नंबर का टावर लोकेशन सायबर सेल गरियाबंद से प्राप्त किया गया जो दिनांक 10 दिसम्बर को संदेही का लोकेशन घटना पुख्ता होने पर स्टाफ एवं गवाह के संदेही के करेंट लोकेशन के आधार पर पता तलाश पर रवाना हुआ।पता तलाश पर संदेही प्रदीप कुमार गर्ग अपने ससुराल ग्राम छिन्दपैन नुआपाड़ा उड़िसा में मिला जिसे पुलिस हिरासत में लेकर पूछताछ पर बताया कि 4-5 माह का मजदूरी का पैसा नही देने से सड़क परसुली पहुंचकर कंपनी के काम में लगे ट्रेक्टर क्रमांक आरजे -14-आरडी-1848 को चोरी कर ले जाना बताया।आरोपी के विरुद्ध पर्याप्त सबूत पाए जाने से आरोपी को समक्ष गवाहन के विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया।इस कार्यवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक ओम प्रकाश यादव, सहायक उप निरीक्षक टीकाराम ध्रुव,प्रधान आरक्षक डीगेश्वर साहू,आरक्षक मुरारी यादव,सैनिक रविशंकर सोनवानी का विशेष भूमिका रहा।

कन्हर नदी में 9 करोड़ की लागत से जल संसाधन विभाग ने कराया एनीकट का निर्माण

रामानुजगंज(विश्व परिवार)। रामानुजगंज कन्हर नदी में करीब 9 करोड रुपए लागत से जल संसाधन विभाग के द्वारा एनीकट का निर्माण कराया गया था।जो भले ही भ्रष्टाचार के भेंट चढ़ गया परंतु एनीकट के कारण आज झारखंड का ग्राम गोदरमाना बाजार बड़ा स्वरूप ले लिया है। एनीकट से रविवार के दिन हजारों हजार की संख्या में लोग छत्तीसगढ़ से गोदरमाना बाजार करने जाते हैं। एनीकट के बनने से भले ही जिस उपयोग के लिए एनीकट बना। निर्माण के बाद आज तक एनीकट का वह उपयोग नहीं हो पाया एनीकट का निर्माण नगर में अप्रैल में में होने वाले भीषण जल संकट से नगरवासियों निजात दिलाने के लिए बना था परंतु बनने के बाद कभी भी उपयोगी साबित नहीं हुआ है। परंतु एनीकट के कारण छत्तीसगढ़ एवं झारखंड के बीच व्यापारिक संबंध काफी मजबूत हुआ रविवार के दिन रामानुजगंज एवं झारखंड के ग्राम गोदरमाना में साप्ताहिक बाजार लगता है। परंतु एनीकट बनने के बाद गोदरामाना का साप्ताहिक बाजार में हजारों हजार की संख्या में लोग गोदरमाना एनीकट के रास्ते बाजार करने जाते हैं। छत्तीसगढ़ के दर्जनों गांव के लोग जाते हैं बाजार करने गोदरमाना..... झारखंड के ग्राम गोदारमना के बाजार का स्वरूप इतना वृहद हो गया है कि छत्तीसगढ़ के दर्जनों गांव के लोग बाजार करने के लिए यहां आना पसंद करते हैं रविवार के दिन आमंत्रण धर्मशाला के सामने सैकड़ो की संख्या में बाइक लगाकर लोग झारखंड के ग्राम कोदरमाना बाजार करने जाते हैं। छत्तीसगढ़ की ओर लगता है छोटा बाजार इससे कई गुना ज्यादा बड़ा बाजार लगता है गोदरमाना में..... एनीकट के छत्तीसगढ़ की ओर गिनती के दुकान लगाते हैं वही झारखंड की ओर सैकड़ो दुकान लगती है यहां छत्तीसगढ़ से भी काफी संख्या में लोग बाजार करने जाते हैं दिन प्रतिदिन यहां का बाजार वृहद होते जा रहा है। गोदारमना पैदल चलने की जगह नहीं मिलती है..... एनीकट के कारण गोदरमाना बाजार का स्वरूप इतना वृहद हो गया है कि एक और यहां बाजार लगाने के लिए काफी कम जगह है वही बड़ी संख्या में लोग यहां दुकान लगाने पहुंचते हैं ऐसे में पैदल चलना भी यहां मुश्किल होता है दुकानदार बताते हैं कि काफी अच्छी दुकानदारी होती है।

अवैध शराब जब्त

धमतरी(विश्व परिवार)। कलेक्टर नम्रता गांधी के निर्देशानुसार जिले में अवैध शराब के विरूद्ध लगातार कार्यवाही की जा रही है। जिला आबकारी अधिकारी श्री प्रभाकर शर्मा ने बताया कि आज भखारा के ग्राम कोपेडीह में दल द्वारा कार्यवाही करते हुए कुल 80 लीटर महुआ शराब जब्त किया गया। साथ ही महुआ शराब बनाने में प्रयुक्त बोरियों में 1600 किग्रा. लाहन (कुल क़ीमत 80 हज़ार रुपए) को नष्ट किया गया। उन्होंने बताया कि अज्ञात आरोपी के खिलाफ आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) के तहत कार्यवाही की गयी। उक्त कार्यवाही के दौरान आबकारी उप निरीक्षक पुरुषोत्तम सिन्हा, निशांत साधु सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

युवा महोत्सव मे जनसंपर्क कि छायाचित्र प्रदर्शनी रहा आकर्षण का केंद्र

विधायक दिपेश साहू ने किया छायाचित्र प्रदर्शनी का अवलोकन

बेमेतरा(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री साय सरकार में सुशासन के 01 साल पूरा होने पर जिले के प्रत्येक विकासखंड मे सुशासन का एक साल, छत्तीसगढ़ हुआ खुशहाल कि थीम कार्यक्रम आयोजित हो रहें है 7 इसी क्रम मे जिला मुख्यालय स्थित कंतेली स्टेडियम मे भी युवा उत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ 7 इस अवसर पर जनसम्पर्क विभाग ने शासन के एक वर्ष पूर्ण होने पर शासन कि जानकल्याणकारी योजनाओं और उपलब्धि को छायाचित्र के माध्यम से नागरिकों को दिखाया 7 विधायक दिपेश साहू ने छायाचित्र प्रदर्शन का अवलोकन किया और सराहना की। विधायक दिपेश द्वारा यह कहा गया है कि जनसंपर्क विभाग ने शासन के एक वर्ष पूर्ण होने पर शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं और उपलब्धियों को छायाचित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया। इस पहल से आम नागरिकों को शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी प्राप्त हुई है, जिससे उन्हें इन योजनाओं का लाभ उठाने का मौका मिला है। इस अवसर पर कलेक्टर रणबीर शर्मा, पुलिस अधीक्षक रामकृष्ण साहू, जिला पंचायत सीईओ टेकचंद अग्रवाल , सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी कर्मचारी , नागरिक और प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधिगण मौजूद थे । छायाचित्र प्रदर्शनी में साय सरकार में सुशासन के 01 साल पूरा होने के अवसर पर महतारी वंदन, कृषक उन्नति, न्योता भोज, पीएम आवास, आयुष्मान भारत, जल जीवन मिशन, धान खरीदी, प्रधानमंत्री जन आरोग्य, श्रीरामलला दर्शन सहित विभिन्न योजनाओं एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियों को छायाचित्र के माध्यम से प्रदर्शित की गई। इस दौरान आमजनों का छत्तीसगढ़ की मासिक पत्रिका जनमन, सुशासन के नवीन आयाम, उदित छत्तीसगढ़ सशक्त नेतृत्व से प्रगति का स्वर्णिम युग आदि पुस्तिकाओं का नि:शुल्क वितरण भी किया गया। किसानों ने साय सरकार की कृषक उन्नति योजना की सराहना की और कहा कि इस योजना से उन्हें समर्थन मूल्य के आलावा अतिरिक्त राशि प्राप्त हो रही है । किसानों ने बताया कि इस योजना के माध्यम से उन्हें नई कृषि तकनीकों, उन्नत बीज, और सिंचाई सुविधाओं के लिए पर्याप्त आय मिल जाती है 7 जनसंपर्क विभाग द्वारा आयोजित छायाचित्र प्रदर्शनी में आम नागरिकों को राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रदर्शनी में मुख्य रूप से राज्य शासन के एक वर्ष के कार्यकाल की प्रमुख उपलब्धियों को उजागर किया गया। इस छायाचित्र प्रदर्शनी के माध्यम से सरकार द्वारा पिछले एक साल में जनकल्याण के लिए किए गए महत्वपूर्ण कार्यों और योजनाओं का विस्तार से प्रदर्शन किया गया। आम नागरिकों ने प्रदर्शनी देखकर प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को सराहा। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रदर्शनी के माध्यम से उन्हें सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं और उपलब्धियों की व्यापक जानकारी मिली है, जो उनके जीवन में सुधार लाने में सहायक हो सकती हैं। इससे लोगों में सरकार के प्रति विश्वास भी बढ़ा है। प्रदेश सरकार की योजनाओं को देखने आए नागरिकों ने विशेष रूप से किसानों के लिए चलाई गई योजनाओं को हितकारी बताया।

कमिश्नर महादेव कावरे ने किया धान खरीदी केन्द्रों का आकस्मिक निरीक्षण

किसानों से मिलकर व्यवस्थाओं का लिया जायजा

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। रायपुर संभागायुक्त महादेव कावरे प्रदेश व्यापी धान खरीदी के तहत गुरुवार को जिले के सिमगा स्थित दामाखेड़ा धान उपार्जन केंद्र पहुंचे। उन्होंने धान खरीदी केन्द्रों में धान बेचने पहुंचे किसानों से मुलाकात कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। श्री कावरे ने निरीक्षण के दौरान सीसीटीवी स्टॉक पंजी, बारदाना रजिस्टर, टोकन रजिस्टर की बारिकी से जांच की। इसके साथ ही ढेरी में लगाए हुए धान को पॉस मशीन के जरिये आर्द्रता को मापा गया। जांच के दौरान धान की गुणवत्ता सही पाया गया। इस दौरान कमिश्नर ने धान उठाव में तेजी लाने के निर्देश संबधित अधिकारियों को दिए है। जिस गति से खरीदी कार्य पूरी होती है ठीक उसी गति से उठाव भी करे। इस दौरान कमिश्नर ने धान खरीदी केंद्र प्रभारी से कहा कि किसान कड़ी मेहनत कर धान उत्पादन करता है। किसान की

मेहनत का वाजिब दाम मिले और उनके काम का सम्मान हो,इसका विशेष ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि धान उपार्जन केंद्र में छाया व बैठक व्यवस्था अनिवार्य रूप से बनाए रखें। उन्होंने कहा कि एक दिन में जितने किसानों से धान की खरीदी हो सके,उतने ही किसानों को धान खरीदी केंद्र में बुलाया जाए। उन्होंने कहा कि ऐसा ना हो कि कोई किसान धान बेचने के लिए आए और उसे अनावश्यक रूप से अधिक समय तक रूकना पड़े। रायपुर संभागायुक्त श्री कावरे ने उपस्थित किसानों, फड़ प्रभारी,मजदूरों अन्य ग्रामवासीयों से बातचीत की बातचीत के इस दौरान उन्होंने ग्राम दामाखेड़ा निवासी कृषक मनमोहन साहू को टोकन तूहर हाथ मोबाइल ऐप के माध्यम से प्राप्त टोकन का भी अवलोकन किया। साथ ही साहू ने संभागायुक्त श्री कावरे को बताया कि मुझे धान बेचने में किसी भी तरह की परेशानी नहीं हुई। इस दौरान श्री कांवरे ने माइक्रो एटीएम व्यवस्था की जमकर सराहना की कहा कि इससे किसानों को तत्काल धान बेचते ही बड़ी आसानी से नगद का आहरण कर सकते है आवश्यक बैंक में लाइन लगाने की जरूरत नहीं होती है।मौके पर उपस्थित कृषक जितेंद्र साहू, ग्राम अड़बंधा द्वारा माइक्रो एटीएम के माध्यम से राशि का आहरण किया गया। उक्त निरीक्षण के दौरान एसडीएम सिमगा अंशुल वर्मा,तहसीलदार अनिरुद्ध मिश्रा,खाद्य अधिकारी,नोडल अधिकारी श्री साहू,डीएमओ एवं डीआरसीएस प्रबंधक धर्मेंद्र कुमार शर्मा सहित संबंधित अन्य अधिकारी कर्मचारी गण उपस्थित थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर मंगलवार 17 दिसंबर 2024

व्यापार समाचार

देश का स्वर्ण भंडार बढ़कर हुआ 882 टन, आरबीआई ने खरीदा सबसे ज्यादा सोना

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने इस साल जनवरी से लेकर अक्टूबर की अवधि में 77 टन गोल्ड खरीदा है। इसमें से करीब 27 टन गोल्ड केवल अक्टूबर में खरीदा गया है। यह जानकारी अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा संकलित आंकड़ों पर आधारित वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (डब्ल्यूजीसी) की रिपोर्ट में दी गई। डब्ल्यूजीसी ने कहा कि आरबीआई द्वारा 2024 के पहले 10 महीनों में खरीदा गया गोल्ड 2023 की समान अवधि की गई सोने की खरीद की तुलना में 5 गुणा अधिक है। आंकड़ों के मुताबिक, आरबीआई का गोल्ड भंडार अब बढक़र 882 टन हो गया है, जिसमें से 510 टन गोल्ड भारत में है। डब्ल्यूजीसी के मुताबिक, उभरती अर्थव्यवस्थाओं के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड की खरीद में बाजार पर अपना वर्चस्व जारी रखा है। तुर्की और पोलैंड ने जनवरी-अक्टूबर 2024 तक अपने भंडार में क्रमश: 72 टन और 69 टन गोल्ड जोड़ा है। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि पूरे वर्ष में हुई शुद्ध गोल्ड खरीद में इन तीनों केंद्रीय बैंकों की हिस्सेदारी 60 प्रतिशत रही है। आरबीआई के साथ दुनिया के केंद्रीय बैंकों द्वारा बड़ी मात्रा में गोल्ड खरीदने की वजह, इसे सुरक्षित संपत्ति माना जाना है। महंगाई और वैश्विक अस्थिरता के समय यह एक हेज के रूप में भी काम करता है। केंद्रीय बैंक द्वारा अधिक मात्रा में गोल्ड खरीदने से सोने की कीमतों में भी बढ़त देखी जा रही है। रिजर्व बैंक ने इस साल की शुरुआत में यूनाइटेड किंगडम में बैंक वॉल्ट में रखे अपने 100 मीट्रिक टन गोल्ड को भारत में अपने वॉल्ट में स्थानांतरित कर दिया था, क्योंकि देश में पर्याप्त घरेलू भंडारण क्षमता थी। गोल्ड के भंडार को स्थानांतरित करने से ब्रिटेन में वॉल्ट के उपयोग के लिए भुगतान किए जाने वाले शुल्क की बचत होने की उम्मीद है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने जून में कहा था, हाल के वर्षों में, डेटा से पता चलता है कि रिजर्व बैंक अपने भंडार के हिस्से के रूप में गोल्ड खरीद रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत स्थिति में, इक्विटी बाजार पर सकारात्मक रुख बरकरार

मुंबई(एजेंसी)। मोतीलाल ओसवाल प्राइवेट वेल्थ (एमओपीडब्ल्यू) की शनिवार को जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2025 की दूसरी छमाही में भारत की आर्थिक गति में सुधार होने की उम्मीद है, जो चुनावों के बाद सरकारी पूंजीगत व्यय में उछाल, ग्रामीण खपत में सुधार और त्योहारी सीजन की मांग जैसे कारकों की वजह से संभव हो पाया है। अल्फा स्ट्रैटेजिस्ट रिपोर्ट में कहा गया है कि विकास स्थिर बना हुआ है, जिससे भारत वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है, जिसमें उम्मीद से कम अस्थिरता और स्थिर विकास है। बेंचमार्क इंडेक्स में 10-12 प्रतिशत के सुधारात्मक चरण के बाद इक्विटी बाजार अब कंसोलिडेशन फेज में हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि हालिया बाजार सुधार के साथ, लार्ज-कैप वैल्यूएशन अट्रैक्टिव बने हुए हैं। निवेशक हाइब्रिड, लार्ज और फ्लेक्सी-कैप फंडों के लिए एकमुश्त स्ट्रैटेजी अपना सकते हैं, जबकि चुनिंदा मिड- और स्मॉल-कैप रणनीतियों के लिए तीन महीने में चरणबद्ध दृष्टिकोण अपना सकते हैं। 38 कारोबारी सत्रों के बाद एफआईआई ने 9,947 करोड़ रुपये का निवेश कर शुद्ध खरीदार का रुख अपनाया। रिपोर्ट में कहा गया है, भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत स्थिति में बनी हुई है और धीरे-धीरे विकास के पटरी पर लौटने के संकेत दिख रहे हैं। इसलिए, हम दीर्घावधि के नजरिए से इक्विटी बाजारों पर सकारात्मक बने हुए हैं। इसने निवेशकों को संतुलित और लचीली रणनीति अपनाकर सावधानी से आगे बढ़ने की सलाह दी। रिपोर्ट के अनुसार, हाल के सुधारों को ध्यान में रखते हुए, यदि इक्विटी अलोकेशन वांछित स्तरों से कम है, तो निवेशक हाइब्रिड, लार्ज और फ्लेक्सीकैप रणनीतियों के लिए एकमुश्त निवेश स्ट्रैटेजी लागू कर सकते हैं और सार्थक सुधार की स्थिति में तुरंत डेप्लॉयमेंट के साथ चुनिंदा मिड और स्मॉल-कैप रणनीतियों के लिए 3 से 6 महीने की अवधि लागू करके आवंटन बढ़ा सकते हैं।

वित्त वर्ष 2024 में जेप्टो के खर्च में 71 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि

नई दिल्ली(एजेंसी)। ब्लिंकिट की प्रतिद्वंद्वी कंपनी जेप्टो के खर्च में वित्त वर्ष 2024 में 71.6 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई और यह बढ़कर 5,747 करोड़ रुपये हो गया, जबकि कंपनी को 1,248.6 करोड़ रुपये का घाटा हुआ। क्रिक कॉमर्स कंपनी के लिए नियोजित पूंजी पर रिटर्न (आरओसीई) -119.3 प्रतिशत रहा और इसका ईबीआईटीडीए मार्जिन -23.81 प्रतिशत रहा। वित्त वर्ष 2024 में जेप्टो का परिचालन राजस्व 4,454 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने वित्त वर्ष 2023 में 3,350 करोड़ रुपये से वित्त वर्ष में 2024 में 4,454 करोड़ रुपये कमाने के लिए 5,747 करोड़ रुपये खर्च किए। आदित पालीचा द्वारा संचालित कंपनी ने अपने सूचना प्रौद्योगिकी और विज्ञापन व्यय में क्रमश: 65.7 प्रतिशत और 40.3 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 116 करोड़ रुपये और 303 करोड़ रुपये की वृद्धि देखी। कंपनी ने वेयरहाउसिंग लागत में 493 करोड़ रुपये और डिलीवरी व्यय में 580 करोड़ रुपये खर्च किए। आय की बात करें तो उत्पादों की बिक्री से होने वाली आय कुल परिचालन राजस्व का 89 प्रतिशत से अधिक होती है, और शेष आय डिलीवरी, वेयरहाउसिंग और विज्ञापन सेवाओं से आती है। कंपनी के वित्तीय विवरणों के अनुसार, जेप्टो ने गैर-परिचालन आय से भी 44 करोड़ रुपये कमाए। वित्त वर्ष 2024 में कंपनी की मौजूदा संपत्ति 1,398 करोड़ रुपये थी। कंपनी ने हाल ही में मोतीलाल ओसवाल प्राइवेट वेल्थ के नेतृत्व में 5 बिलियन डॉलर के वैल्यूएशन पर एक फंडिंग राउंड में 350 मिलियन डॉलर कमाए। पिछले हफ्ते, पालीचा ने कहा कि वह वर्क-लाइफ बैलेंस के खिलाफ नहीं हैं और अपने प्रतिद्वंद्वियों को भी इसकी सलाह देते हैं। उनका यह बयान एक वायरल पोस्ट के बाद आया है जिसमें क्रिक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर टॉक्सिक वर्क कल्चर का आरोप लगाया गया था। एक उपयोगकर्ता द्वारा रेडिट पोस्ट में आरोप लगाया गया था कि जेप्टो का वर्किंग एनवायरमेंट टॉक्सिक है, जिसमें कर्मचारी 14 घंटे की थकाऊ शिफ्ट में काम करते थे। इसने दावा किया कि कंपनी कर्मचारियों पर मांग के साथ दबाव भी डालती है।

ऑस्ट्रेलिया बनाम भारत, गाबा टेस्ट: स्टीव स्मिथ ने जड़ा 33वां टेस्ट शतक, ये बनाए रिकॉर्ड्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के दिग्गज बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने अपनी खोई हुई फॉर्म प्राप्त कर ली है।भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाफ गाबा में खेले जा रहे सीरीज के तीसरे टेस्ट में उन्होंने कमाल की शतकीय पारी (101) खेली है।यह उनके टेस्ट करियर का 33वां और भारतीय टीम के खिलाफ 10वां शतक रहा। साल 2024 में यह उनका पहला टेस्ट शतक है।ऐसे में आइए उनकी पारी और आंकड़ों पर एक नजर डालते हैं। स्मिथ ने 185 गेंदों का सामना करते हुए शतक पूरा किया। शुरुआती ओवरों में इस खिलाड़ी पर भारतीय गेंदबाजों ने दबाव बनाया, लेकिन जैसे ही स्मिथ की नजरें जमीं उन्होंने आकर्षक शॉट लगाना शुरू कर दिया।एक समय ऑस्ट्रेलिया के 3 बल्लेबाज सिर्फ 75 रन पर पवेलियन में थे। यहां से स्मिथ ने ट्रेविस हेड के साथ मिलकर पारी संभाली।हेड के साथ स्मिथ ने 302 गेंदों में 241 रनों की साझेदारी निभाई। उन्होंने अपनी पारी में 12 चौके लगाए। स्मिथ के टेस्ट करियर का यह 33वां शतक है। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान स्टीव वॉ और न्यूजीलैंड के केन विलियमसन को पीछे छोड़ दिया है। दोनों बल्लेबाजों ने 32 टेस्ट शतक लगाए हैं।स्मिथ ने इंग्लैंड के पूर्व दिग्गज एलिस्टेयर कुक की बराबरी कर ली है। कुक ने अपने टेस्ट करियर में 161 मैच खेले थे और इसकी 291 पारियों में 33 शतक लगाने में कामयाब रहे थे।वॉ ने 168 टेस्ट मैचों में 32 शतक लगाए थे। स्मिथ अब ऑस्ट्रेलिया के लिए दूसरे सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। पहले स्थान पर रिकी पोंटिंग हैं। उन्होंने 168 टेस्ट की 287 पारियों में 41 शतक लगाए थे। स्मिथ अब 33 शतक के साथ दूसरे स्थान पर हैं।सक्रिय खिलाड़ियों में स्मिथ से ज्यादा शतक सिर्फ इंग्लैंड के जो रूट ने लगाए हैं। उनके बल्ले से 152 टेस्ट में 36 शतक निकले हैं।विराट कोहली के नाम टेस्ट में 30 शतक है। स्मिथ संयुक्त रूप से भारत के खिलाफ सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। रूट ने 55 पारियों में भारतीय टीम के खिलाफ 10 टेस्ट शतक लगाए हैं।अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में स्मिथ भारत के खिलाफ सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाज भी बने हैं। उन्होंने पोटिंग को पीछे छोड़ दिया है।पोटिंग ने भारत के खिलाफ 14 शतक लगाए थे। स्मिथ के अब 15 शतक हो गए हैं। स्मिथ ने पहला टेस्ट साल 2010 में पाकिस्तान क्रिकेट टीम के खिलाफ खेला था।

ऑस्ट्रेलिया बनाम भारत: ट्रेविस हेड ने लगातार दूसरे टेस्ट में जड़ा शतक, ये बनाए रिकॉर्ड्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज ट्रेविस हेड की शानदार फॉर्म जारी है। भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाफ ब्रिस्बेन के गाबा में खेले जा रहे सीरीज के तीसरे टेस्ट में उन्होंने कमाल की शतकीय पारी खेली है।यह उनके टेस्ट करियर का 9वां और भारतीय टीम के खिलाफ तीसरा शतक रहा। उनकी बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने पारी संभाल ली है। हेड ने इससे पहले एडिलेड में भी शतकीय पारी खेली थी।आइए उनकी पारी और आंकड़ों पर एक नजर डालते हैं। हेड ने 115 गेंदों का सामना करते हुए शतक पूरा किया। उन्होंने अपने चिर-परिचित अंदाज में बल्लेबाजी की और मौके मिलने पर आकर्षक शॉट लगाए।एक समय 75 रन पर कंगारू टीम के 3 बल्लेबाज पवेलियन में थे। यहां से हेड ने स्टीव स्मिथ के साथ मिलकर पारी संभाली।इस सीरीज में अब तक कुछ खास कमाल नहीं कर पाए स्मिथ ने एक छोर संभाले रखा। पहले 2 टेस्ट में हेड ने 11, 89 और 140 के स्कोर बनाए थे। हेड ने अपना पहला टेस्ट मैच साल 2018 में पाकिस्तान क्रिकेट टीम के

खिलाफ खेला था। उन्होंने अब तक 52 टेस्ट मैच खेले हैं, जिसकी 85 पारियों में 3,500 से ज्यादा रन बनाने में सफल रहे हैं।उनके टेस्ट करियर का यह 9वां शतक है। उन्होंने 18 अर्धशतक भी जड़े हैं। अपने टेस्ट करियर में हेड ने सबसे ज्यादा रन भारत के खिलाफ ही बनाए हैं।ऑस्ट्रेलिया की सरजमीं पर हेड का यह 8वां शतक है। हेड ने भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाफ 13 टेस्ट खेले हैं, जिसमें 50 से ज्यादा की औसत के साथ 1,000 से ज्यादा रन बनाए हैं।

ऑस्ट्रेलिया बनाम भारत: जसप्रीत बुमराह ने 12वीं बार लिया 5 विकेट हॉल, ये बनाए रिकॉर्ड्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम और ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के बीच खेले जा रहे गाबा टेस्ट में जसप्रीत बुमराह ने 5 विकेट झटके हैं। यह उनके टेस्ट करियर का 12वां 5 विकेट हॉल है।कंगारू टीम के खिलाफ यह तीसरा मौका है, जब उन्होंने 5 विकेट हॉल लिया है। उनके तीनों 5 विकेट हॉल ऑस्ट्रेलिया में आए हैं।इस सीरीज में यह दूसरी बार है जब बुमराह ने 5 विकेट हॉल लिए हैं। पहले टेस्ट में भी उन्होंने यह कारनामा किया था। बुमराह ने उस्मान ख्वाजा (21), नाथन मैकस्वीनी (9), मार्नस लाबुशेन (12), स्टीव स्मिथ (101) और ट्रेविस हेड(152) को पवेलियन भेजा।ऑस्ट्रेलिया के शीर्षक्रम के शुरुआती 5 विकेट बुमराह ने ही

लिए। स्मिथ (101) और हेड (152) ने कंगारू टीम की पारी संभाल ली।इसके बावजूद बुमराह अकेले ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों से लड़ते रहे। उनका साथ किसी भी भारतीय गेंदबाज ने नहीं दिया।बता दें कि पर्थ टेस्ट में भी बुमराह ने कप्तान के तौर पर 5 विकेट हॉल लिया था। बुमराह अब सेना देशों (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया) में सबसे ज्यादा बार 5 विकेट हॉल लेने वाले भारतीय गेंदबाज बन गए हैं।उन्होंने कपिल देव का रिकॉर्ड तोड़ा है। कपिल ने सेना देशों में 7 बार 5 विकेट हॉल लिए थे। पाकिस्तान के पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज इमरान खान ने भी सेना देशों में 8 बार 5 विकेट हॉल लिए थे।एशिया के गेंदबाजों में वसीम अकरम (11 बार 5 विकेट हॉल) पहले स्थान पर हैं। बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया की सरजमीं पर सबसे ज्यादा 5 विकेट हॉल लेने वाले भारतीयों के मामले में बिशन सिंह बेदी और भगवत चंद्रशेखर की बराबरी कर ली है।बुमराह से आगे अब सिर्फ अनिल कुंबले और कपिल हैं। कुंबले ने 4 बार ऑस्ट्रेलिया में 5 विकेट हॉल लिए हैं। कपिल ने यह कारनामा 5 बार किया था।

सोने की कीमतें 2025 में रह सकती हैं स्थिर, मामूली वृद्धि के भी मिल रहे संकेत: वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल

नई दिल्ली(एजेंसी)। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के अनुसार, 2025 में गतिशील वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के बीच सोने के लिए संभावनाओं और चुनौतियों का मिश्रण देखने को मिल सकता है। इसी के साथ पीली धातु की कीमतों में वृद्धि की संभावना भी देखी जा रही है। केंद्रीय बैंक की कार्यवाहियां, भू-राजनीतिक तनावों और विकसित हो रही उपभोक्ता और निवेशक मांग जैसे कारक सोने के प्रदर्शन के लिए अहम माने जा रहे हैं। नए वर्ष के साथ सोने की कीमत स्थिर रह सकती है या कीमतों में मामूली वृद्धि भी दर्ज की जा सकती है। सोने की कीमतों के स्थिर रहने को लेकर वैश्विक जीडीपी, बॉन्ड प्रतिफल और मुद्रास्फीति जैसे प्रमुख आर्थिक घटकों का संकेत मिल रहा है,

लेकिन जोखिम अभी भी बने हुए हैं। सोने की कीमतों के वर्तमान परिदृश्य को देखें तो मौजूदा कमजोरी एमसीएक्स में 76,000-78,000 की संभावित ट्रेडिंग रेंज का संकेत देती है। इसके साथ बाजार में जारी अस्थिरता के बीच अल्पकालिक दृष्टिकोण सतर्क बना हुआ है। एलकेपी सिक्योरिटीज के वीपी रिसर्च एनालिस्ट, जतिन त्रिवेदी ने कहा, अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों से मिले-जुले संकेतों के बाद मुनाफावसूली तेज होने से सोने में भारी बिकवाली देखी गई। उत्पादक मूल्य सूचकांक (पीपीआई) डेटा कम रहा, लेकिन साप्ताहिक बेरोजगारी दावों में बढ़ोतरी के कारण कॉमेक्स पर सोने की कीमतें 2,710 डॉलर से गिरकर 2,670 डॉलर पर आ गईं। उन्होंने आगे जानकारी देते हुए कहा, एमसीएक्स गोल्ड 79,000 से गिरकर 77,450 पर आ गया, जो कल से 1,500 से अधिक की गिरावट दर्शाता है। इसके अलावा, राष्ट्रपति ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में संयुक्त राज्य अमेरिका सोने की गति में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जा रहा है। एक व्यवसाय समर्थक एजेंडा घरेलू भावना को बढ़ावा दे सकता है। हालांकि, वैश्विक निवेशक सतर्क बने हुए हैं और मुद्रास्फीति के दबाव और सप्लाई चेन से जुड़ी बाधाओं को लेकर चिंता में हैं। उम्मीद की जा रही है कि फेडरल रिजर्व इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में 100 बेसिस प्वाइंट की कटौती करेगा, जो कि सोने का समर्थन करेगा, लेकिन नीति में उलटफेर चुनौतियों को पैदा कर सकता है।

आरबीआई का किसानों को बड़ा तोहफा, बिना ब्याज के मिलेगा 2 लाख का लोन

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बुधवार को अपनी मौद्रिक नीति समीक्षा में किसानों के लिए एक बड़ी घोषणा की है। अब किसान बिना किसी ब्याज के 2 लाख रुपये तक का कृषि ऋण ले सकेंगे। इससे पहले यह सीमा 1.6 लाख रुपये थी। यह फैसला बढ़ती महंगाई और कृषि लागत को देखते हुए लिया गया है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि यह फैसला छोटे और सीमांत किसानों को वित्तीय संस्थानों से कर्ज लेने में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि महंगाई और कृषि में उपयोग होने वाले कच्चे माल की लागत में वृद्धि को देखते हुए यह कदम उठाया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को चालू वित्त वर्ष की पांचवीं मॉनेटरी पॉलिसी मीटिंग में लगातार 11वीं बार पॉलिसी रेट में कोई बदलाव नहीं किया और इसे 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखा. हालांकि इकोनॉमी में नकदी बढ़ाने के मकसद से केंद्रीय बैंक ने सीआरआर (कैश रिजर्व रेश्यो) को 4.5 फीसदी से घटाकर चार फीसदी कर दिया. इस कदम से बैंकों में 1.16 लाख करोड़ रुपए की अतिरिक्त नकदी उपलब्ध होगी. सीआरआर के तहत वाणिज्यिक बैंकों को अपनी जमा का एक निर्धारित हिस्सा नकद भंडार के रूप में केंद्रीय बैंक के पास रखना होता है। इसके साथ ही आरबीआई ने मौजूदा स्थिति को देखते हुए चालू वित्त वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 7.2 प्रतिशत से घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया है। आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष में खुदरा मुद्रास्फीति के अनुमान को भी 4.5 प्रतिशत बढ़ाकर 4.8 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है।

शब्द सामर्थ्य -266

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. राजद प्रमुख 6. रखवाला, रक्षा करने वाला 7. दयालु, रहम करने वाला (उ.) 10. युग्म, जोड़ा, एक राशि, एक फिल्म अभिनेता 13. कैदखाना, जेल, हिरासत 15. जानकी, जनकनंदनी 17. व्यर्थ की बात, बकबक 18. नारी, स्त्री, महिला 21. विक्रय करना 22. वाणी, कथन, वादा 24. ताश में दस अंकों वाला पत्ता 25. नगर का, नागरिक, चतुर।

ऊपर से नीचे
1. बेफ्रिक, निश्चिंत, जिसे कोई परवाह न हो 2. मूर्ति 3. दोस्त, प्रेमी 4. कुशल, विशेषज्ञ 5. बगुला 8. झुका हुआ, झुकाया गया, नत 9. इधर-उधर, पास पड़ोस 11. किस्मत, तकदीर, भाग्य 14. बंदर, मर्कट, कपि 16. शक्तिशाली, बलवान 18. संतान, संतति 19. अस्तबल, घुड़साल 20. राजी करना, रूठे हुए को प्रसन्न करना 23. सरिता, नदिया, नद।

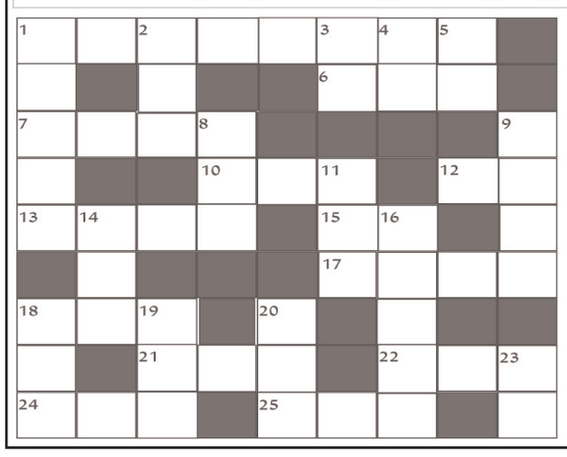

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 256 का हल

मा	म	ला	■	सि	वा	य	■	कि
लि	■	चा	ह	त	■	म	म	ता
क	सू	र	■	म	ग	न	■	ब
■	र	■	■	■	द	■	■	■
क	मा	न	■	पा	र	स	■	स
मी	■	म	जा	ल	■	न	क	ली
ना	दा	न	■	ना	र	द	■	का
■	मि	■	■	■	तौं	■	■	■
सु	नी	ल	■	अ	धी	र	■	जी

सू- दोकू क्र. 266

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.256 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, मंगलवार 17 दिसम्बर 2024

राज्य वीरता पुरस्कार के लिए कर सकेंगे आवेदन 2 जनवरी तक

रायपुर (विसं)। प्रदेश के बच्चों को किसी घटना विशेष में उनके द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस एवं बुद्धिमत्ता के लिए राज्य वीरता पुरस्कार प्रदान किया जाना है। इसके तहत 5 बालक एवं बालिकाओं को 25 हजार रूपए की राशि तथा प्रशस्ति पत्र पुरस्कार के रूप में प्रदान किया जाएगा। आवेदन 02 जनवरी 2025 तक पुराना पुलिस मुख्यालय परिसर जीई रोड में महिला एवं बाल विकास कार्यालय में जमा की जा सकती है।

संक्षिप्त समाचार

राजधानी रायपुर के पुलिस ग्राउंड में आयोजित राष्ट्रपति निशान (पुलिस कलर्स अवार्ड 2024) अलंकरण समारोह में छत्तीसगढ़ महिला पुलिस पाइप बैंड टीम के साथ 'दैनिक विश्व परिवार' के सिटी रिपोर्टर हरी शंकर सोनी।

सेवानिवृत वाणिज्यकर अधिकारी ब्रजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव का निधन

91 वर्ष की उम्र में ली अंतिम साँस

रायपुर (विश्व परिवार)। न्यू शांति नगर शंकर नगर निवासी सेवा निवृत वाणिज्यकर अधिकारी, ब्रजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव जी का निधन 91 वर्ष में हो गया। वे श्री विनय श्रीवास्तव (आयकर सलाहकार), संजय श्रीवास्तव (प्रदेश महामंत्री भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ़), आरती श्रीवास्तव, रजनी रायजादा के पिता थे। उनका अंतिम संस्कार दिनांक 16.12.2024 को समय 3 बजे, मुक्ति धाम देवेंद्र नगर, रायपुर छत्तीसगढ़ में किया गया।

संत ज्ञानेश्वर स्कूल का वार्षिकोत्सव 19 को, आनंद मेला भी

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रियदर्शिनी नगर स्थित संत ज्ञानेश्वर स्कूल का वार्षिक उत्सव और आनंद मेला गुरुवार, 19 दिसंबर को चौबे कालोनी स्थित महाराष्ट्र मंडल में होगा। स्कूल के प्रभारी परितोष डोनगांवकर ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र मंडल के आजीवन सभासद, समाजसेवी और प्रतिष्ठित व्यवसायी रोहित काले होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाराष्ट्र मंडल के अध्यक्ष अजय मधुकर काले करेंगे। स्कूल के सह प्रभारी नवीन देशमुख ने बताया कि इस वर्ष स्कूल का वार्षिकोत्सव चौबे कालोनी स्थित महाराष्ट्र मंडल के सभागृह में आयोजित किया गया है। जिसकी तैयारियां स्कूल प्रबंधन और महाराष्ट्र मंडल प्रबंधन में हो रही है।वार्षिकोत्सव के साथ महाराष्ट्र मंडल के दिव्यांग बालिका विकास गृह के सहायतार्थ आनंद मेला भी लगाया जाएगा। प्राचार्य मनीष गोवर्धन ने बताया कि प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी वार्षिकोत्सव को लेकर जहां बच्चों में उत्साह है, वहीं शिक्षकों में भी उत्साह बना हुआ है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी के साथ प्रस्तुति की अंतिम रूपरेखा तैयार की जा रही है। बच्चे अभी अपनी प्रस्तुति को लेकर पढ़ाई के बाद अभ्यास में जुटे हुए हैं।

छत्तीसगढ़ में डेयरी और वन उपज विकास के लिए ऐतिहासिक समझौते पर हुए हस्ताक्षर

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देशभर में किसानों की आय दोगुनी करने के प्रयासों के तहत पशुपालन और डेयरी उद्योग को दिया जा रहा बढ़ावा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ ने सहकारी विकास और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाया है। केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह और मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की उपस्थिति में आज दो महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। यह पहल प्रदेश में डेयरी और वन उपज विकास को गति देने के साथ ही आदिवासी समुदाय और किसानों के उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी।

कार्यक्रम के दौरान छत्तीसगढ़ सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के बीच डेयरी क्षेत्र के विकास के लिए समझौता हुआ। साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित और राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (एनसीओएल) के बीच एक और समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने इस अवसर पर कहा कि छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेश है, जहां कुदरत ने अपनी संपदा को भरपूर मात्रा में बांटा है। यहां न तो पानी की कमी है, न भूमि की और न मेहनतकश लोगों की। आवश्यकता थी केवल एक अच्छी शुरुआत की। आज के इस कार्यक्रम में डेयरी और वन उपज के क्षेत्र में दो नई और सकारात्मक शुरुआत हुई हैं। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया यह समझ चुकी है कि हमारे खानपान में रासायनिक तत्वों की बढ़ती मात्रा के कारण कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और थायरॉइड जैसी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने जैविक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। ऑर्गेनिक खेती न केवल स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, बल्कि यह पर्यावरण और भूमि की उर्वरता के लिए भी अनुकूल है।

छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेश है जहां कुदरत ने अपनी संपदा को भरपूर मात्रा में बांटा है: अमित शाह

उन्होंने गुजरात के अनुभव साझा करते हुए बताया कि वहां देसी गाय के गोबर से ऑर्गेनिक खाद बनाकर 21 एकड़ भूमि पर खेती सफलतापूर्वक की जा रही है। उन्होंने कहा कि जैविक खेती के माध्यम से हम कृषि को लाभकारी बना सकते हैं और भूमि की उर्वरता को पुनर्जीवित कर सकते हैं। वन उपज के विकास को लेकर उन्होंने कहा कि आज से जनजातीय समुदाय की वन उपज, जो पहले कौड़ियों के दाम पर बिक जाती थी, अब सर्टिफिकेशन और बेहतर मार्केटिंग के माध्यम से उचित मूल्य पर बेची जाएगी। इससे आदिवासी समुदाय को सशक्त करने और उनकी आय में वृद्धि करने में मदद मिलेगी। उन्होंने राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (एनसीओएल) की स्थापना को मील का पत्थर बताते हुए कहा कि इसके तहत देशभर में जैविक उत्पादों का परीक्षण और सर्टिफिकेशन सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने छत्तीसगढ़ सरकार और इन योजनाओं से जुड़े सभी अधिकारियों की सराहना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह कदम प्रदेश को विकास और समृद्धि की दिशा में ले जाने में सहायक सिद्ध होगा।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में किसानों की आय दोगुनी करने के प्रयासों के तहत पशुपालन और डेयरी उद्योग को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने इस पहल को 'डबल इंजन सरकार' के तेजी से काम करने और परिणाम देने की कार्यशैली का उदाहरण बताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस समझौते के माध्यम से प्रदेश में तकनीकी उन्नयन, पेशेवर अनुभव और डेयरी उद्योग के विकास में एनडीडीबी की विशेषज्ञता का लाभ मिलेगा। डेयरी उद्योग से न केवल रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और प्रदेशवासियों के पोषण स्तर में भी सुधार होगा। दूध उत्पादन के बढ़ने से सुपोषण अभियान को नई दिशा मिलेगी, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य और विकास में सहायता मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश में वर्तमान में 621 सहकारी समितियां कार्यरत हैं। इस समझौते के माध्यम से आगामी तीन वर्षों में 3200 नई समितियों की स्थापना के साथ 3850 गांवों को जोड़ा जाएगा। साथ ही, 6 जिलों के 300 गांवों में मिल्क प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन की स्थापना की जाएगी। दुग्ध संकलन, जो वर्तमान में प्रतिदिन 75,000 किलोलीटर है, अगले तीन वर्षों में 5 लाख किलोलीटर प्रतिदिन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अलावा, 220 बल्क मिल्क कूलर इकाइयों की स्थापना की जाएगी।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में सहकारी समितियों से 16,324 पशुपालक जुड़े हुए हैं, जिन्हें निकट भविष्य में बढ़ाकर 1.5 लाख किया जाएगा।

'आंचलिक कबड्डी प्रतियोगिता (मध्य क्षेत्र) 2024' में हरियाणा और राजस्थान की टीमों के बीच फाइनल मैच आज

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर द्वारा आयोजित

रायपुर (विश्व परिवार)। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा दिनांक 16-17, दिसम्बर 2024 को सिब्बल पैलेस, सेरीखेड़ी, जी.ई.रोड, रायपुर के मैदान में आयोजित दो दिवसीय 'आंचलिक कबड्डी प्रतियोगिता (मध्य क्षेत्र) 2024' का उद्घाटन श्री अभिषेक कुमार, क्षेत्रीय भ.नि. आयुक्त-I द्वारा आज दिनांक 16 दिसम्बर को किया गया।

आज, दिनांक 16.12.2024 को खेले गए तीन कबड्डी मैचों में से पहले मैच में मध्यप्रदेश की कबड्डी टीम ने दिल्ली (मुख्यालय) की टीम को 64-47 के स्कोर से हराया, दूसरे मैच में राजस्थान की टीम ने छत्तीसगढ़ की टीम को 73-26 के स्कोर से और तीसरे मैच में हरियाणा की टीम ने मध्यप्रदेश की टीम को 78-07 के स्कोर के भारी अंतर से हराया। आज खेले गएँ तीनों मैच अत्यंत रोमांचक रहे।

उल्लेखनीय है कि कल दिनांक 17 दिसंबर 2024 को सुबह 10.00 बजे प्रतियोगिता का फाइनल मैच हरियाणा टीम के साथ राजस्थान की टीम के बीच खेला जाएगा। प्रतियोगिता का समापन कार्यक्रम दिनांक 17.12.2024 को पूर्वाह्न 11.30 बजे आयोजित किया जाएगा जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री नामदेव साहू, सदस्य 'छत्तीसगढ़ राज्य कबड्डी फेडरेशन' एवं विशेष अतिथि के रूप में श्री कृपाराम साहू, सदस्य 'छत्तीसगढ़ राज्य कबड्डी फेडरेशन' उपस्थित होंगे। प्रतियोगिता के समापन कार्यक्रम के दौरान विजेता टीम एवं खिलाड़ियों को शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

रक्सौल में पकड़ा गया 2 करोड़ से अधिक का प्रतिबंधित माल

रायपुर (विश्व परिवार)। पूर्व मध्य रेल के समस्तीपुर मंडल में रेल सुरक्षा बल के अधिकारियों ने राजकीय रेल पुलिस और कस्टम के साथ मिलकर प्रतिबंधित वस्तुओं का एक बड़ा खेप पकड़ा है जिसकी कीमत करोड़ों में है। प्राप्त जानकारी के अनुसार संयुक्त अभियान चलाकर रक्सौल स्टेशन पर कुल 2 करोड़ 63 लाख रुपए से अधिक मूल्य वाले डिस्पोजेबल आई पॉड बरामद किए गए। रविवार की सुबह 08:35 बजे प्लेटफार्म संख्या 01 पर खड़ी गाड़ी संख्या 15273 रक्सौल-आनंद विहार सत्याग्रह एक्सप्रेस के एसएलआर की जांच के दौरान उपरोक्त माल को पकड़ा गया और स्टेशन पर उतार लिया गया। गाड़ी संख्या 15273 के एसएलआर कोच से कुल आठ पैकेट उतारे गये। उसके बाद रेल सुरक्षा बल, रक्सौल, राजकीय रेल पुलिस, रक्सौल एवं कस्टम, रक्सौल द्वारा एसएलआर कोच से उतारे गये आठ पैकेटों को जीआरपी थाना, रक्सौल पर लाया गया जहां पर फाड़ कर देखा तो उसमें कुल 6598 अदद डिस्पोजेबल पॉड डिवाइस (प्रतिबंधित विदेशी वस्तु, नेपाल) मिला जिसे जप्त कर लिया गया। अंतरराष्ट्रीय बाजार में जप्त की गई सामग्री की कीमत 26302600/- रुपये आकलित की गयी है।

प्लेसमेंट कर्मचारियों की अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी, शहरों में कामकाज प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में प्लेसमेंट कर्मचारियों विरोध प्रदर्शन जारी है। अपनी मांगों को लेकर कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल है। जिससे प्रदेश के निकायों में कई कार्यों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। प्रदेश के करीब 20 हजार प्लेसमेंट कर्मचारियों ने ठेका प्रक्रिया को समाप्त करने की मांग की है। ये कर्मचारी छत्तीसगढ़ नगरीय निकाय प्लेसमेंट कर्मचारी महासंघ के बैनर तले विरोध प्रदर्शन का मोर्चा बुलंद किए हुए हैं।

मिली जानकारी के मुताबिक कर्मचारियों ने तीन दिसंबर से प्रदेश स्तर पर विरोध प्रदर्शन तेज कर दिया है। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे पदाधिकारियों ने बताया की प्रशाशनिक अधिकारी इन कर्मचारियों को आंदोलन स्थल पर पहुंच कर आश्वाशन ही दे रहे है। कर्मचारी अपनी मांगों पर अड़े हैं और वह लगातार ज्ञापन सौंपकर अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। ज्ञात हो विगत सोमवार को कर्मचारियो द्वारा विधानसभा का घेराव करने कूच किया गया था, लेकिन पुलिस के द्वारा उन्हें बीच में ही रोक दिया गया। कर्मचारी अपनी मांगों पर अड़े हैं और वह लगातार ज्ञापन सौंपकर अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। प्लेसमेंट कर्मचारियों की हड़ताल का असर कई सेवाओं पर पड़ रहा है. साफ सफाई व्यवस्था सहित अन्य काम बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है. नगरीय निकाय में ठेकेदार के माध्यम से वेतन का भुगतान होता है।

प्लेसमेंट कर्मचारियों की मांग है कि ऐसे में ठेका पद्धति को बंद किया जाए और सीधे विभाग से कर्मचारियों को वेतन दिया जाए। नगरीय निकाय प्लेसमेंट कर्मचारी महासंघ के अंतर्गत कुल 184 नगरीय निकायों, नगर निगम 14 नगर पालिका 50 व नगर पंचायत 120 हैं, जिसमें लगभग 20 हजार कर्मचारी कार्यरत हैं, जो विगत कई वर्षों से अपनी मांगों को शासन एवं प्रसाशन को अवगत कराते आ रहे हैं। आंदोलन का नेतृत्व कर रहे लोगो ने बताया की सरकार द्वारा मौखिक रूप से मांगे स्वीकृत कर ली गई है, लेकिन वह लिखित में सारी बातो को चाहते है। आगे कहा की यदि उनकी मांगे पूर्ण नहीं होती है, तो वह चुनाव का बहिष्कार कर अपना आंदोलन जारी रखेंगे।

स्व. कुलदीप निगम की पुण्य तिथि वृद्धाश्रम, बालगृह में फल वितरण

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रेस क्लब रायपुर के पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद के संस्थापक सदस्य एवं प्रथम महासचिव, पत्रकार एवं समाजसेवी स्व. कुलदीप निगम की 22 वीं पुण्य तिथि 16 दिसम्बर सोमवार को उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए माना कैम्प स्थित कुलदीप निगम वृद्धाश्रम, छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा संचालित मानसिक दिव्यांग बाल गृह (बालक) माना कैम्प, बाल जीवन ज्योति बालिका गृह पुरानी बस्ती एवं स्व. निगम के पैतृक गृह ग्राम नर्रा के शासकीय कुलदीप निगम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में उनकी प्रतिमा एवं फ़ोटो में पुष्पहार पहनाकर श्रद्धांजलि दी गई। साथ ही बुजुर्गों एवं बच्चों को फ़ल वितरण किया गया।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह 2024 के अवसर पर रायपुर मंडल में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। मंडल रेल प्रबंधक संजीव कुमार की अध्यक्षता में ऊर्जा संरक्षण पर सेमिनार का आयोजन बेहतर भविष्य के लिए ऊर्जा बचाने के उद्देश्य से पूरे राष्ट्र में प्रत्येक वर्ष 14 दिसंबर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जाता है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल में प्रतिवर्ष कि तरह इस वर्ष भी 08 दिसंबर 2024 से 14 दिसंबर 2024 तक विद्युत ऊर्जा संरक्षण सप्ताह मनाया गया। जिसके अंतर्गत विद्युत (सामान्य) विभाग द्वारा रायपुर मंडल के सभी स्टेशनो, प्रशासनिक भवनो, कार्यालयो में विद्युत ऊर्जा स्लोगन, विद्युत बचत जागरूकता हेतु पोस्टर एवं नुक्कड नाटक तथा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमो का आयोजन किया गया।

इसी संदर्भ में राष्ट्रीय विद्युत ऊर्जा संरक्षण सप्ताह 2024 के अवसर पर दिनांक: 13.12.2024 को रायपुर मंडल में मंडल रेल प्रबंधक रायपुर कार्यालय परिसर में एक सेमिनार आयोजित किया गया इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक महोदय संजीव कुमार ने की। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक महोदय (बजरंग अग्रवाल), वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर/सामान्य (महावीर कुमार जैन), वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर/कर्षण (प्रतीक मिश्रा), वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी (सुरेश चंद्रा), वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/समन्वय (अनिल कुमार पांडे), मंडल विद्युत इंजीनियर/कर्षण (विवेक कुमार), प्राजेक्ट कोर्डिनेटर/क्रेडा (डां प्रियंका पचौरी मिश्रा) सहित विद्युत विभाग के पर्यवेक्षक एवं कर्मचरीगण शामिल हुए।

इस अवसर पर विद्युत सामग्रीयो कि प्रदर्शनी एवं विभागीय प्रशन्नोतरी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान मंडल के सभी अधिकारियो, कर्मचारियो एवं आम नागरिको से उर्जा संरक्षण के तहत उर्जा बचत करने कि आदत डालने की अपील की गई ताकि रेलवे द्वारा बचाई गई उर्जा देश हित में काम आ सके।

रेल प्रशासन आम नागरिको से भी आग्रह करता है कि उर्जा संरक्षण देश एवं उज्जवल भविष्य के लिए अत्यावश्यक है इसलिए घरो एवं कार्यस्थलो पर उर्जा बचत कर देश की प्रगति में अपनी भगीदारी सुनिश्चित करें।

रायपुर जिला प्रशासन की टीम ने राइस मिलों का किया आकस्मिक निरीक्षण

अनियमित्ता पाए जाने पर तीन राइस मिलों में सीलबंद की कार्रवाई

रायपुर (विश्व परिवार)। जिला प्रशासन की टीम ने आज जिले के विभिन्न राइस मिलों की जांच की। समय पर धान उठाव समेत कई ड्ढ बिंदुओं पर जांच की गई। जिला प्रशासन की टीम ने महामाया राइस मिल, लड्डू गोपाल राइस मिल, गोयल एनर्जी राइस मिल, मां संतोषी राइस मिल एवं रानू गांधी राइस मिल की जांच की। इस दौरान महामाया राइस मिल, मां संतोषी राइस मिल और रानू गांधी राइस मिल में अनियमित्ता पाए जाने पर सीलबंद की कार्रवाई की गई है। इस कार्रवाई के दौरान राजस्व विभाग, खाद्य विभाग एवं पुलिस विभाग की टीम भी मौजूद रहीं। उल्लेखनीय है कि राइस मिलों की जांच निरंतर जारी रहेगी और धान उठाव भी जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए गए।

डिप्टी सीएम अरुण साव को इण्डियन वाटर वर्क्स एसोशिएशन ने राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ कार्यक्रम की अध्यक्षता के लिए दिया आमंत्रण

10-12 जनवरी तक होगा आयोजन, छत्तीसगढ़ में दूसरी बार होगा राष्ट्रीय सम्मेलन

रायपुर (विश्व परिवार)। इंडियन वाटर वर्क्स एसोशिएशन (IWWA) ने रायपुर में होने वाले अपने 57वें राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ कार्यक्रम की अध्यक्षता के लिए उप मुख्यमंत्री तथा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्री अरुण साव को आमंत्रित किया है। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारियों एवं एसोशिएशन के सदस्यों ने उप मुख्यमंत्री श्री साव से मुलाकात कर इसके लिए आमंत्रण दिया। श्री साव ने अधिकारियों के आमंत्रण को स्वीकार करते हुए शुभारंभ सत्र की अध्यक्षता की सहमति दी है। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के प्रमुख अभियंता डॉ. एम.एल. अग्रवाल और मुख्य अभियंता श्री राजेश गुप्ता सहित विभागीय अभियंताओं की टीम ने उप मुख्यमंत्री से मिलकर आयोजन की अध्यक्षता का आमंत्रण दिया। इंडियन वाटर वर्क्स एसोशिएशन ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य आतिथ्य के लिए आमंत्रित किया है। उल्लेखनीय है कि इंडियन वाटर वर्क्स एसोशिएशन के 57वें राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन रायपुर के जैनम मानस भवन में आगामी 10 जनवरी से 12 जनवरी तक किया गया है। तीन दिवसीय इस आयोजन में वाटर वर्क्स से जुड़े देश-विदेश के जाने-माने 400 से अधिक वरिष्ठ एवं अनुभवी इंजीनियर हिस्सेदारी करेंगे। छत्तीसगढ़ को दूसरी बार इस आयोजन की मेजबानी मिली है।

मुख्यमंत्री ने सड़क दुर्घटना में 7 लोगों की मृत्यु पर गहरा दुख प्रकट किया

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने बालोद जिले के भानुप्रतापपुर-दल्लीराजहरा मार्ग पर हुए भीषण सड़क हादसे में 7 लोगों की मृत्यु पर गहरा दुख प्रकट किया है।उन्होंने इस दुर्घटना में मृत लोगों के शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है। मुख्यमंत्री श्री साय ने ईश्वर से दिवंगत लोगों की आत्मा की शांति तथा उनके शोक संतप्त परिवारजनों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना की है। उन्होंने इस दुर्घटना में घायलों के बेहतर इलाज की व्यवस्था करने के निर्देश जिला प्रशासन को दिए हैं।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354